श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर (पागल बाबा)

‘शांतिपुर आश्रम’, सापटग्राम
आसाम

‘वीरेन्द्र नगर आश्रम’, दरंग
आसाम

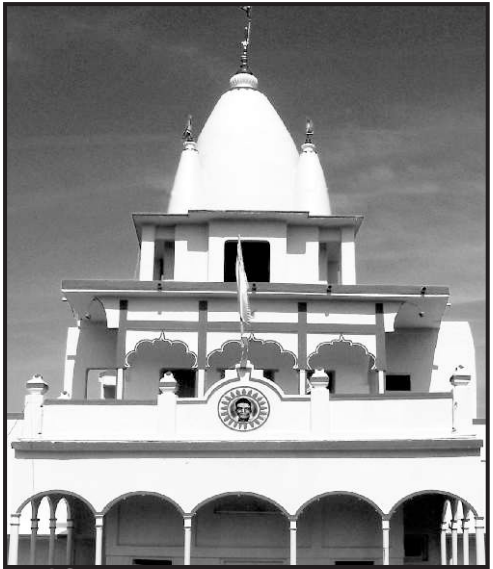

‘श्रीनिवास आंगन’, पागलबाबा आश्रम
जसीडीह, झारखण्ड

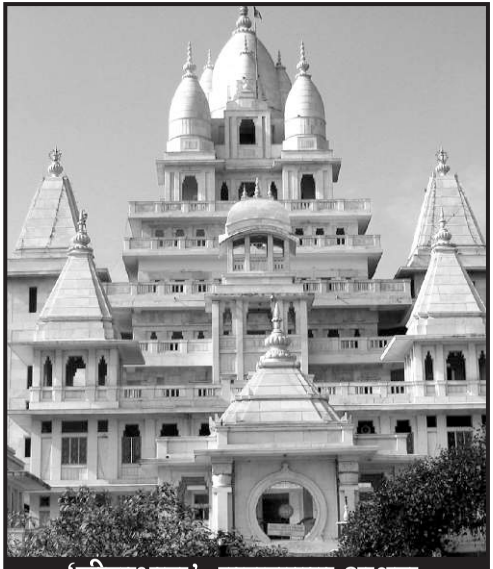

‘लीलाधाम’, पागलबाबा आश्रम
वृन्दावन, उ.प्र.

'श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर'- एक विभूति

श्रीमद् भगवद्गीता में श्रीकृष्ण भगवान् ने कहा है ..

यदा यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानम अधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

(श्रीमद्भगवदगीता, अध्याय - ४)

अर्थात् : जब जब धर्म की हानि होने लगती हैं और अधर्म आगे बढ़ने लगता है तब तब मैं स्वयं की सृष्टि करता हूँ, अर्थात जन्म लेता हूँ....

पूज्य ठाकुर श्रीलीलानन्द जी महाराज का अवतार धर्म की स्थापना के लिए इस कलयुग में हुई है ऐसी हमारी मान्यता है। पूज्य ठाकुर ने ६ आश्रमों की स्थापना विभिन्न स्थानों पर की एवं अखण्ड हरिनाम संकीर्तन का संकल्प किया। सभी आश्रमों में अनवरत एवं अविराम नाम संकीर्तन सुचारु रुप से चल रहे हैं। कलयुग में नाम संकीर्तन ही एक मात्र मोक्ष प्राप्ति के लिए सबसे सरल एवं सुगम मार्ग है। इसी कारण हमारे ठाकुर ने सबसे अधिक मान्यता हरिनाम संकीर्तन को ही दी। इन्हें **'पागल बाबा'** के नाम से ही पुकारा जाता है कारण कि ये **'हरिनाम संकीर्तन'** में पागल रहते थे।

पूज्य श्री ठाकुर जी महाराज ने अपने भक्तों को सत्यता, सरलता, एवं संयमता का पाठ पढ़ाया। कर्मठ बनने के लिए प्रेरित किया एवं आपसी प्रेम, सद्भाव तथा सेवा भाव का उपदेश दिया। यद्यपि बाबाश्री सन् १९८० में समाधिस्थ हो गये

पर उनकी दया एवं कृपा सभी भक्तों पर अनवरत बरसती है। बाबाश्री भक्तों के लिए सुरक्षा कवच की भाँति है जिसकी अनुभुति हमें समय-समय पर होती रहती है।

ऐसे ही कुछ अनुभूतियों के संस्मरण का उल्लेख इस पुस्तक में है। इसको लिपिबद्ध करने का उद्देश्य है कि बाबाश्री के भक्तों को वर्तमान एवं भावी पीढ़ी इसका अध्ययन करे एवं समझें कि बाबाश्री अपने भक्तों पर सदा कृपा एवं दया की दृष्टि बनाये रखते है, बस आवश्यकता है कि उनके बताये हुए मार्ग पर अग्रसर होते रहें तथा उनके आदेशों का पालन करें।

वर्तमान में भी भक्तों को बाबाश्री के सान्निध्य का आभास मिलता है। इस बात का पूर्ण विश्वास है कि जब भी कोई भक्त सच्चे हृदय से उन्हें पुकारता है तो बाबाश्री अपनी कृपा-पूर्ण उपस्थिति का आभास करवाते हैं।

भक्तों से निवेदन है कि जिन्हें भी कभी किसी प्रकार की अनुभूति हो तो हमें लिपिबद्ध कर प्रेषित करें ताकि हम ऐसे अनुभवों को अगले संस्करण में प्रकाशित कर सकें।

भक्तों द्वारा प्राप्त बाबाश्री के चमत्कार एवं अनुभुति का यह द्वितीय संस्करण है।

सत्य कुमार टिबड़ेवाल

अध्यक्ष : **श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर (पागलबाब) संकीर्तन मण्डल**

कोलकाता

दिनांक : ०७/०१/२०१८

।। श्री राधागोविन्दाय नमः।।

श्रीमद् लीलानन्दजी ठाकुर (पागलबाबा) का संक्षिप्त जीवन परिचय

परम पूज्य सन्त शिरोमणि श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर (पागलबाबा) जी महाराज का जन्म उच्च ब्राह्मण कुल में बलता रतनगंज, टंगाईल, जिला मैमन सिंह, पूर्वी बंगाल (वर्तमान बंगला देश) में हुआ था। श्रद्धेय पिता का नाम **श्री कालीचरण चक्रवर्ती** एवं पूज्य माता का नाम **अन्नपूर्णा देवी** था। बाबाश्री का विवाह **सुदेवी** नामक उच्च ब्राह्मणकुलोत्पन्ना सुलक्षणा कन्या से हुआ था। महान सौभाग्यवती, आदर्श पतिव्रता, अत्यन्त धर्मपरायण नारी होने के नाते बाबाश्री को भगवत् भक्ति की ओर ले जाने का श्रेय माँ सुदेवी को ही दिया जाता है।

माँ सुदेवी का अल्पावस्था में ही वैकुण्ठवास हो गया था। तत्पश्चात् बाबाश्री अपने आराध्यदेव के अन्वेषण हेतु निकल पड़े। अनेक यातनाओं, दुसह्य बाधाओं का सामना करते हुये, अनाहार रहकर अनेक वर्षों तक हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं में विचरण करते हुये महान विभूतियों एवं महान आत्माओं से साक्षात्कार किया एवं आशीर्वाद प्राप्त किया। यहाँ बाबाश्री को यह अनुभूति हुई कि ईश्वर जंगल, पहाड़ या गुफा — कन्दराओं में नहीं वरन् हर प्राणीमात्र के हृदय में विराजमान है।

तब से आज तक बाबाश्री ने हर मानव हृदय में उसी का दर्शन किया । हर बालक में उसी की उपस्थिति का अनुभव किया, हर स्त्री में उन्हें मातृत्व की मधुरानुभूति हुई ।

सन् १९४७ में भारत विभाजन के पूर्व बाबाश्री आसाम आये और विभिन्न स्थानों में अहर्निश भगवन्नामानुष्ठान आयोजित किया । इसी बीच ग्वालपाड़ा जिलान्तर्गत **सापटग्राम** नामक ग्राम में कुछ एक भक्तों को साथ ले १०८ वर्षों तक चलने वाले अखण्ड हरि कीर्तन का व्रत संकल्पित करते हुए एक आश्रम **'शान्तिपुर आश्रम'** की स्थापना की । समयानुसार इसका विस्तार हो गया । आज इसके प्रांगण में कई मंदिर है । शिक्षा-प्रचार हेतु एक विद्यालय एवं जनसाधारण की सुविधा के लिये एक औषधालय का निर्माण हुआ । तदुपरान्त आसाम में ही दरंग जिलान्तर्गत बढ़झाड़ नामक गाँव में अपने द्वितीय आश्रम **'वीरेन्द्रनगर आश्रम'** की स्थापना की । यहाँ एक तालाब है जिसका शीतल जल अनेक जटिलतम व्याधियों का नाशक है।

इसी दौरान गौरीपुर निवासी एक दम्पत्ति **श्री मणिन्द्रनाथ सरकार** तथा **सुधारानी सरकार** बाबाश्री के सामीप्य में आये । बाबाश्री के बाल सुलभ भाव पर मोहित हो इस निःसन्तान दम्पत्ति ने अपना सर्वस्व बाबा को अर्पण कर दिया । बाबाश्री ने भी पुत्रवत् भाव से इन्हें मातृ-पितृ सम स्थान दिया । **आश्रम माँ**

एवं **दादू** के उच्चासन पर अभिहित उक्त सरकार दम्पत्ति ने पंचतत्व में लीन होने तक हर दैहिक प्राकृतिक तथा सामयिक परिस्थितियों का सामना करते हुये बाबाश्री के साथ एवं तदोपरान्त भी निःस्वार्थ भाव से मानव कल्याणार्थ सेवा में संलग्न रहे । यहीं पर आसाम परिभ्रमण के दौरान धुबड़ी के प्रमुख व्यवसायी **श्री चिरंजीलालजी हरलालका** बाबाश्री की शरण में आये । बाबाश्री से प्रभावित हो गृहत्याग कर आजीवन सेवा-भाव एवं हरिनाम का प्रचार करते हुये बाबाश्री के सभी आश्रमों की देखरेख करते करते वृन्दावन में ब्रह्मलीन हुए ।

सन् १९६४ में बाबाश्री का ध्यान श्रीकृष्ण जन्मभूमि वृन्दावन की ओर आकर्षित हुआ । बाबाश्री ने यहाँ भी एक आश्रम बनाने का संकल्प लिया और इस प्रकार भारतीय संस्कृति एवं हरिनाम के प्रचार हेतु अल्पावधि में ही इसे साकार रूप दे दिया । ज्ञानगुदड़ी के समीप भूतगली में एक और आश्रम **'लीलाकुंज'** की स्थापना की । जिसमें १०८ वर्षों तक चलने वाले अखण्ड हरिनाम संकीर्तन का संकल्प लिया । इस संकीर्तन से समस्त वायुमण्डल तथा दसों दिशायें गुंजायमान हो उठी । अष्ट प्रहर निरन्तर चलने वाला यह संकीर्तन आज भी अनवरत चल रहा है ।

जनवरी १९६७ में बाबाश्री का एक कार यात्रा के दौरान जसीडीह आगमन हुआ । वहाँ भी जनता के आग्रह पर तथा जनकल्याण की भावना को दृष्टिगत रखते हुये एक आश्रम बनाने

की इच्छा व्यक्त की । बाबाश्री के इच्छा से अवगत हो बाबाश्री के एक अनन्य भक्त श्री श्रीनिवासजी फतेहपुरिया ने अपने ही विशाल भूखण्ड का एक हिस्सा अर्पण कर दिया । अष्टधातु निर्मित युगल सरकार की दिव्य जुगल जोड़ी की प्रतिष्ठा की और अन्यान्य आश्रमों की तरह यहाँ भी १०८ वर्षों तक चलने वाला अखण्ड हरिनाम संकीर्तन का संकल्प लिया । इस आश्रम का नाम **'श्रीनिवास आंगन'** रखा गया । पूज्य बाबाश्री के उपदेशानुसार धर्मप्रचार, जरूरत मंदो की सहायता तथा रोगियों को निःशुल्क उपचार कराने हेतु उनके भक्तों ने श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए आश्रम परिसर में ही श्री पागलबाबा चैरिटेबल होमियो सेन्टर का दिनांक ४ अक्टूबर २००५ को प्रारम्भ करवाया ।यह क्षेत्र शिक्षा के मामले में पिछड़ा हुआ है और धन के अभाव में अधिकतर बच्चे शिक्षा पाने में असमर्थ हैं । इस अप्राकृतिक विपत्ति को पराजित कर और निःशुल्क शिक्षा-प्रचार हेतु आश्रम के मुख्य द्वार के विपरीत बाबाश्री की तीन एकड़ जमीन पर ''**श्री लीलानंद पागलबाबा विद्यापीठ**'' के नाम से एक विद्यालय की स्थापना १६ अगस्त २००६ को जन्माष्टमी के दिन हुई । स्थानीय गरीब बच्चों के लिये एक ऐसा स्वप्न जो मील का पत्थर था, वो साकार हो गया ।

सन् १९६९ में बाबाश्री को ऐसी प्रेरणा हुई कि आगरा का ताजमहल देखने के लिये देश-विदेश से लाखों करोड़ो पर्यटक आगरा आते हैं, मगर श्रीकृष्ण की प्रेममयी लीलास्थली होने के उपरान्त भी तथा आगरा के निकटस्थ होते हुये भी वृन्दावन आने

की प्रेरणा लोगों को नहीं हो पाती । देश-विदेश के पर्यटकों का ध्यान वृन्दावन की ओर आकर्षित करने के लिये एक भव्य मंदिर बनाने की परियोजना बनाई । वृन्दावन मथुरा मार्ग पर एक विशाल भू-खण्ड लेकर अल्पावधि में ही, जहाँ केवल सूखा खेत था, वहाँ एक विशाल संगमरमर के नौ मंजिला मन्दिर **'लीलाधाम'** की स्थापना की । चारो तरफ शस्य श्यामला हरित भूमि पर यह श्वेत प्रस्तर जड़ित अतुलनीय मंदिर भारतवर्ष में अपने ढंग का प्रथम मंदिर है । इसकी चौड़ाई करीब १५० फीट (क्षेत्रफल १८००० वर्गफुट) तथा ऊँचाई २२१ फीट है । इसके हर मंजिल पर विभिन्न देव-मन्दिर है । इस आश्रम का नाम **'लीलाधाम'** रखा गया । यह अनूठा मन्दिर भारतवासियों को तो आकर्षित करता ही है, विदेशी पर्यटकों को भी मुग्ध करता है और भक्ति प्रधान देश की महत्ता को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सिद्ध भी करता है ।

यहीं पर सन् १९७८ में बाबाश्री ने निम्न एवं मध्यम वर्ग के रोगियों एवं जटिलतम व्याधियों से आक्रान्त व्यक्तियों को सहज सुलभ एवं सहानुभूतिपूर्ण चिकित्सा उपलब्ध कराने का संकल्प लेते हुये एक विशाल अस्पताल की नींव अत्यन्त ही सादगीपूर्ण वातावरण में स्वयं अपने हाथों से रखी । इसका मूल उद्देश्य है अर्थाभावग्रस्त एवं साधनहीन वर्ग को उचित चिकित्सा सुलभ कराना ।

२४ जुलाई सन् १९८० को वह दुर्भाग्यपूर्ण क्रूर रात्रि,

जब असंख्य शोक विह्वल, काल ताप संतप्त, मौन शोकाकुल नर-नारियों के बीच बाबाश्री की समाधि क्रिया सम्पन्न हुई । वैदिक रीति से वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ अपने हृदय पर बज्र रखकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से हजारों भक्तों ने पूज्य बाबाश्री को ब्रज रज अर्पित की । बाबाश्री की समाधि मन्दिर के दाँई ओर स्थापित है ।

बाबाश्री का नश्वर शरीर आज हमारे बीच नहीं है पर उनकी अलौकिक लीलाएँ, वार्तायें तथा संस्मरण हरपल हमारे साथ है । ऐसा विश्वास है कि बाबाश्री अपने दिव्य नेत्रों से हर क्षण हमें देख रहे हैं और प्रेरित कर रहे हैं कि हम सभी उस निर्दिष्ट मंजिल कि ओर अग्रसर हों जिसका उन्होंने मार्ग-दर्शन किया था । बाबाश्री क्षण-प्रतिक्षण हमारे साथ हैं । उनका अक्षुण्ण आशीर्वाद हर पल हमें आत्मिक बल प्रदान करता है । ऐसी महान् आत्माएँ इस क्षणभंगुर संसार से कभी जाती नहीं वरन् अपने महान कार्यों से अमर हो जाती है । हम बाबाश्री से निरन्तर यह प्रार्थना करते हैं कि आप हमें वह दिव्य अन्तर्चक्षु दे जिससे हम उन्हें देख सके । ऐसी प्रेरणा दें जिससे हम उनके दिग्दर्शित मार्ग का अनुसरण कर सकें । ऐसी शक्ति दें जो जनकल्याण एवं हरिनाम का बीड़ा उन्होंने उठाया था, हम उस यज्ञ में अपने आपको आहुत कर सकें ।

बाबाश्री की अमृतवाणी

पूज्य बाबाश्री ने स्वयं को सदैव वेद, उपनिषद्, पुराण, गीता आदि के भागवत् ज्ञान रहित एक अबोध बालक सदृश ही जनता जनार्दन के सम्मुख रखा, अतएव उनकी शिक्षा में ज्ञानतत्व के स्थान पर कर्मतत्व की प्रधानता रही । वे अपने आपको सदैव जगदाधिपतकि परमेश्वर का दासानुदास कहा करते । इसी दास्य-भाव एवं निराभिमान बाल-सुलभ भाव से ही इतने महानाभियान में जयी हुए । उनके तेजमय मुखमण्डल पर मधुर बाल सुलभ हसित भाव हर किसी को अनायास ही अपनी ओर आकर्षित करता ।

अपनी देव वाणी से बाबाश्री ने गृहस्थ धर्म की महत्ता की व्याख्या करते हुये कहा कि अगर गृहस्थ अपने घर में सुख-शान्ति बनाये रखे तो ईश्वर की खोज में अन्यत्र नहीं जाना होगा। परमेश्वर सदैव उसके घर में विराजमान होगा । स्त्री जाति मात्र को ही वे **'माँ'** शब्द से सम्बोधित करते हुये कहते कि स्त्री का पति ही उसका एकमात्र ईश्वर है । सेवा निष्ठा भाव से अपने सास-ससुर, परिजन एरं गुरुजन की सेवा करने वाली स्त्री ही सच्ची सती है । ईश्वर तो स्वयं सती के सतीत्व के समक्ष नमन करते हैं । पुरूष वर्ग को सम्बोधित करते हुए बाबाश्री ने कहा कि माता-पिता ही उनके इष्ट है, आराध्य है । उनकी सेवा ही सच्ची

ईश्वराधना है । यहाँ तक कि गुरूपूजा भी माता पिता के आदेशानुसार ही करनी चाहिये । जिस घर में ऐसा वातावरण हो वह घर केवल आदर्श घर ही नहीं वरन् मन्दिर बन जाता है ।

दरिद्रनारायण को ही बाबा ने नारायण रूप में देखा । वास्तव में दीन-दरिद्र के कारण ही तो वह लक्ष्मीकान्त परमेश्वर दीनबन्धु-दीनानाथ कहलाये तो फिर दीन-दरिद्र की उपेक्षा क्यों? बाबाश्री ने यही संदेश समाज को दिया कि अपने धर्म कर्तव्य का पालन करते हुये दीन-दरिद्र की सेवा ही सच्ची नारायण सेवा है । अन्न-भोजन देना ही सर्वोच्च दान है । इसी भावना के आधार पर बाबाश्री विभिन्न अनुष्ठानों पर विशाल भण्डारों का आयोजन किया करते । उपसंहार यह है कि हर प्राणीमात्र में दीनबन्धु का प्रतिबिम्ब देखना चाहिये । इसी सद्भावना से आत्मिक कल्याण के साथ-साथ समाज का कल्याण भी हो सकता है ।

संकीर्तन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बाबाश्री ने कहा कि नामी से नाम बड़ा होता है । हरिनाम स्मरण को ही इस कलिकाल में ईश्वर प्राप्ति का सरलतम मार्ग बताया । अहंकार को पतन का कारण बतलाते हुये कहा कि जिस व्यक्ति को अपने आप सम्मान, पद, वैभव आदि का लेश मात्र भी अभिमान न हो वही उन्नति कर सकता है । अहंकारमुक्त एवं क्षमाशील

व्यक्तित्व ही श्रेष्ठतम व्यक्तित्व है । हिन्दू संस्कृति एवं भारतीय परम्परा के प्रति अपना विश्वास प्रगट करते हुये बाबाश्री ने कहा कि हमें अपने पूर्वजों की पद्धति का अनुसरण एवं अंधी आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता का बहिष्कार कर स्वकर्त्तव्य-पथगामी होना चाहिये इससे आध्यात्मिक विकास तो होगा ही देश भी उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच सकेगा ।

''नाम संकीर्तन यस्य सर्व पापप्रणाशनम्।
प्रणामो दुःख शमनस्तं नमामि हरिं परम् ।।

जिनके नाम का सुमधुर गान सर्व पापों का नाश करने वाला है, और जिनको प्रणाम करना सकल दुःखों को नाश करने वाला है उस सर्वोत्तम श्री हरि के पादपद्मों में मैं नमन करता हूँ ।

राधे गोबिन्दानन्दे हरि हरि बोलो हरि बोल ।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

अविस्मरणीय अलौकिक अनुभव

जब राजकुमार का रोष भक्ति में तब्दीस हुआ ।

— आश्रम माँ, श्रीमती सुधारानी सरकार

आश्रम माँ श्रीमती सुधारानी सरकार ने अपने लेख 'श्रीमद् लीलानन्द ठाकुर पागल बाबा जैसे मैंने देखा' में इस दृष्टान्त का उल्लेख किया है । यह उन दिनों की घटना है जब बाबाश्री गौरीपुर (आसाम) में नाम संकीर्तन कर रहे थे । तत्कालीन राजपरिवार के द्वितीय राजकुमार 'श्री प्रतीश बरूआ' की पत्नी के हृदय में बाबाश्री के प्रति अडिग आस्था जाग्रत हुई । उसने बाबाश्री से आग्रहपूर्वक दीक्षा भी ले ली । एक सामान्य साधु से राजघराने की महिला ने दीक्षा ली—यह राजकुमार को नहीं भाया । उन्होंने पत्नी को राजमहल छोड़कर बनारस जाकर रहने का क्रूर आदेश दिया । सारी तैयारियाँ हो गई किन्तु नौकरों ने जब उसका सामान महल से बाहर ले जाना चाहा तो सामान टस से मस न हुआ । इस अद्भुत घटना से राजकुमार की आँखें खुलीं । उसका मन इस चमत्कारी साधु के प्रति श्रद्धा से भर गया । बाबाश्री के ढाई महीने के गौरीपुर प्रवास के दौरान राजकुमार ने उनकी सच्ची सेवा की । बाबाश्री को उसने एक हथिनी भी भेंट की । बाबा ने उसका नाम रखा-महारानी । उक्त हथिनी का जब देहान्त हुआ तब बाबाश्री ने उसकी सम्मानपूर्वक अंत्येष्टि की, श्वेत वस्त्र भी धारण किए ।

वेश बदलकर परीक्षा ली गुरु ने !

— आश्रम माँ, श्रीमती सुधारानी सरकार

यह घटना सापटग्राम की है । बाबाश्री अक्सर हँसकर मुझसे कहा करते थे कि तुम जानती भी हो कि सिफलिस की बीमारी किसे कहते हैं ? क्या तुम पहाचन सकोगी । पहचान सको तो जानूँ !! बाबाश्री के पाँव में छोटे-छोटे फोड़े हो जाते थे जिन्हें दबाने से गाढ़ा-सा द्रव निकलता था । उसी दौरान बाबाश्री कलकत्ते गए । उधर हमारे यहाँ सापटग्राम आश्रम में एक व्यक्ति आया । जो व्याधि बाबाश्री के पैरों में थी, उसी से यह व्यक्ति भी ग्रस्त था । उसने हमसे आग्रहपूर्वक कहा कि मैं आश्रम का काम करूँगा और यहीं रहूँगा । आश्रम दादू काम करने वाले लोगों को देख बड़े प्रसन्न होते थे । दादू बोले — तुम्हें बगान का पूरा काम करना होगा । वह राजी हो गया । दो दिन तक वह क्या करता रहा, मुझे पता नहीं । पर तीसरे दिन अचानक आकर मुझसे कहा — बगान में बेल पर खीरा लगा है, एक ही है, मैं खाना चाहता हूँ । मैंने कहा — एक लगा है, उसे रहने दो, मैं दूसरा दे देती हूँ । पर वह उसी खीरे को खाने की जिद्द पर अड़ा रहा । मुझे बाबाश्री की सीख का स्मरण हो आया कि द्वार पर आये हर किसी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करो । न जाने किस भेष में कभी भगवान स्वयं आ जाए । मैंने वही खीरा उसे दे दिया । वह बड़ा प्रसन्न हुआ । फिर उसने कहा — मुझे साबुन का टुकड़ा दीजिए, मैं नहाना चाहता हूँ । उसने स्नान किया और आकर बोला — देखो-देखो । मेरा सारा रोग दूर हो गया । हम सभी दंग थे । सचमुच उसका

सारा शरीर निर्मल-निरोग हो गया था . वह काम करने बगान में गया । पर उसके बाद उसे किसी ने नहीं देखा . बहुत ढूँढा, किन्तु नहीं मिला । कौन था वह ? यह भेष बदलकर कौन आया था मेरी परीक्षा लेने ?

उन सफेद चद्दरों के भीतर क्या करिश्मा था ?

-- गंगाबिशन टिबड़ेवाल

यह मुकुन्दगढ़ (राजस्थान) की घनटा है । बाबाश्री मुकुन्दगढ़ पहुँचे । उन्हें मोहनलाल जी टिबड़ेवाल द्वारा निर्मित सत्संग भवन का उद्घाटन करना था । भोजन-प्रसाद का जिम्मा मुझ पर था । उस समय एक निर्दिष्ट मात्रा से अधिक मिठाई बनाने पर सरकार की ओर से पाबन्दी थी । ब्राह्मण-भोज के उपरान्त प्रायः पाँच सौ व्यक्तियों का भोजन बचा हुआ था । भोजन सामग्री को ध्यान में रखते हुए शाम को चार सौ बनियों को निमंत्रण दे दिया गया। किन्तु भोजन के समय हर वर्ग से पधारे तकरीबन हजार लोगों को देखकर मैं घबड़ाया क्योंकि और भोजन बनाने की आवश्यकता नहीं — यह निर्देश मेरा ही था । मैं तत्काल मोहनलाल जी के पास पहुँचा । वे बोले — मैं क्या जानूँ ? बाबाश्री से कहो । बाबाश्री से कहा । बाबा हँसते हुए बोले — इसमें घबड़ाने की क्या बात है । कुछ सफेद चद्दरें ले आओ । बाबाश्री ने अपने कर-कमलों से सारे भोजन को ढँक दिया । फिर मुझसे कहा — एक तरफ से चद्दर उठाकर सामग्री

निकालते रहो । सारे अतिथियों ने प्रसाद ग्रहण किया । हमारे अचरज की कोई सीमा न रही जब देखा कि विपुल परिमाण में भोजन-सामग्री अब भी बची हुई है । बाबाश्री को बताया गया, वे बोले — गाँव में बाँट दो । पन्द्रह दिनों तक मुकुन्दगढ़ एवं आस-पास के गांवों में वही प्रसाद वितरित किया गया । कैसी अभूतपूर्व अनुभूति थी वह !!

बीमारी हुई एक हफ्ते में रफुचक्कर !

— गंगाबिशन टिबड़ेवाल

मुझे हाई ब्लड प्रेशर की शिकायत रहती थी । डाक्टरी दवा और सलाह पर चलता था । नमक, घी, तेल इत्यादि बन्द थे । रूखे फुल्के और हरी सब्जी ही मेरे आहार थे । सत्संग भवन के उद्घाटन के उपरान्त बाबा मेरे घर पधारे । उन्होंने कहा — 'क्या चाहते हो ?' मैंने हाथ जोड़कर कहा — मुझे स्वस्थ कर दीजिए । बड़ा परेशान हूँ । बाबाश्री मुस्कराये—बस इतनी सी बात ? एक हफ्ते बाद अच्छे डाक्टर से चेकअप करवाना । कोई बीमारी नहीं रहेगी । मैने ठीक एक हफ्ते बाद सीकर के श्रीकल्याण अस्पताल में रक्तचाप की जाँच करवायी । डाक्टर ने कहा — आपको कोई बीमारी नहीं । उसके बाद आज दस साल हो गये, सब कुछ खाता पीता हूँ । पूर्णतः स्वस्थ हूँ ।

(सन् १९८८ में श्री पागलबाबा प्रतिष्ठा द्वारा प्रकाशित स्मारिका में श्री गंगाबिशन जी द्वारा लिखित — श्री पागलबाबा

के चमत्कार जो मैंने महसूस किये से उद्धृत हैं उक्त दोनों अनुभव)

पित्त की थैली के पत्थर चीनी से गल गये !

— स्व० बनवारी लाल बगड़िया

सन् १९६७-६८ की घटना हैं । मेरी पित्त-थैली में पत्थर हो गये थे । ऑपरेशन के पहले एक्सरे करवाने हेतु कलकत्ते के वेलेव्यू नर्सिंग होम पहुँचा । वहाँ गौरीशंकर जी भिवानीवाला मिले । उन्होंने हिदायत दी कि ऑपरेशन के बारे में श्रीनिवास जी फतेहपुरिया से बात कर लेनी चाहिये, वे इसी अस्पताल में भर्ती थे । मैं उनके कमरे में पहुँचा । श्री गोविन्दराम भिवानीवाला भी वहाँ मौजूद थे । तय हुआ कि ऑपरेशन के पहले एक बार बाबाश्री से पूछ लिया जाए । वे गिरीडीह के पास जसीजीह में ही थे । मैं बाबा के पास पहुँचा । आश्रम माँ ने मेरी तकलीफ की जानकारी बाबाश्री को दी । बाबा हँसे और कहा — फीस मुझे दे देना । मैं ठीक कर दूँगा । पर बात वही की वहीं रह गई । कुछ समय बाद बाबाश्री के द्वारा आयोजित राधा-गोविन्द के प्राण प्रतिष्ठा उत्सव में सम्मिलित होने मैं सपरिवार जसीडीह पहुँचा । उत्सव के दौरान मेरे पेट में भयंकर पीड़ा होने लगी । बाबाश्री को मालूम हुआ । उन्होंने एक कटोरी में थोड़ी चीनी मंगवाकर उसे हाथ में लेकर कुछ मंत्र उच्चारित किए और कहा — थोड़ी-थोड़ी करके दिन में दो बार खा लेना । मैं मन ही मन हँसा कि चीनी

पत्थर गला देगी तो मेडिकल साईन्स की जरूरत ही क्या रहेगी ? चीनी के सेवन से कुछ लाभ हुआ, पर दर्द तब भी था । आश्रम में ही मेरे बगल के कमरे में कलकत्ते से आये होम्योपैथी के डाक्टर ठहरे हुए थे । उनसे दवा मांगी तो वे बाबा की आज्ञा लेने चले गये । बाबाश्री ने कहा — 'व अक्षर की कोई दवा हो तो दे सकते हो ।' मुझे बोरेक्स दी गई । मैं चीनी और दवा दोनों ही खा रहा था । उत्सव समापन तक मैं लगभग स्वस्थ हो गया । काम के सिलसिले में विदेश जाने के पहले अपने निजी डाक्टर की सलाह से मैंने गोलियाँ, कैप्सूल, इन्जेक्शन इत्यादि खरीदे । पर विदेशयात्रा के दौरान इनकी जरूरत बिल्कुल नहीं पड़ी । आज बीस वर्ष बीत गये, पेट में दर्द भी कभी नहीं हुआ । हमारे डाक्टर ने नई एक्सरे निकलवाने कहा और नई एक्सरे देखकर सब दंग रह गये कि पित्त की थैली के पत्थर चीनी से कैसे गायब हो गये ?

(सन् १९८८ की स्मारिका में बगड़िया जी के आलेख)
'श्रीमद् पागलबाबा द्वारा चमत्कारिक चिकित्सा' से उद्धृत)

साधु की बूढ़ी आँखे धोखा कैसे खा सकती थीं ?

— चौथमल तोषनीवाल

बेलूर मठ के 'लाल बाबा' एक बार वृन्दावन पधारे । बाबाश्री ने उनकी बड़ी आवभगत की तथा एक महीने अपने

आश्रम में रखा । इसके कुछ दिनों (लगभग सन् १९६५-६६ में) बाद इलाहाबाद में कुम्भ मेले में लाल बाबा का बड़ा कैम्प लगा । लाल बाबा ने बाबाश्री को आग्रहपूर्वक वहाँ बुलाया । एक बड़ा एवं सुन्दर कैम्प भी गुरूदेव के लिए बनवाया गया । बड़झाड़ धाम से बाबाश्री पन्द्रह भक्तों को साथ लेकर इस कुम्भ मेले के लिए मिनी बस से रवाना हुए । बाबा के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती थी । तत्कालीन रेलमंत्री गुलजारी लाल नन्दा बिना गार्ड इत्यादि के बाबाश्री से मिलने आये । एक वृद्ध साधु लाल कपड़े पहने रोज बाबाश्री के कैम्प में आता । एक दिन भीड़ कुछ कम थी । उस साधु ने बाबा से कहा — 'मैं एक बात पूछना चाहता हूँ ।' बाबाश्री बोले—पूछो । साधु ने कहा — आपको मैंने ३६ वर्ष पहले हरिद्वार के कुम्भ में देखा था । आपको याद होगा, वहाँ आग भी लग गई थी । आपने ही सबको बचाया और आग बुझाई । उस समय मैं युवक था और आप वृद्ध । अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और आप युवा । बाबा मुस्कराकर बोले — 'मैं तब थोड़ा-सा ही वृद्ध था ।' मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था । साथु जब जाने के लिए उठा तो मैं उसके पीछे-पीछे निकल पड़ा । मैंने विश्वासपूर्वक उससे कहा — आपने किसी और बाबा को देखा होगा । उसने उत्तर दिया ''बच्चा ! मेरी ये बूढ़ी आँखे धोखा नहीं खा सकती । यही पगला बाबा था !!'

व्याधि स्वयं ले ली और दे दिया अडिग विश्वास !

— चौथमल तोषनीवाल

सन् १९६० के आस-पास की घटना है । मेरी उम्र तब २६-२७ वर्ष की रही होगी । उन दिनों मैं आसाम में रहता था । मेरे पेट में जलन्धर रोग हो गया था । गौहाटी मेडिकल कलेज के डाक्टरों ने कहा — इसका बचना मुश्किल है । पानी जमा हुए काफी दिन हो गये हैं । सारी आँतें खराब हो गई हैं । चाहें तो जयपुर की शुष्क जलवायु में इन्हें ले जा सकते हैं । सलाईन पर रखना होगा । मैंने अपने बड़े भाई से कहा — मुझे जयपुर नहीं जाना । सापटग्राम वाले बाबा के पास ले चलो । हम बाबा के पास बृहस्पतिवार के दिन पहुँचे । बाबाश्री ने रसोइये से कहा — इसे दिन भर में थोड़ा-थोड़ा ही सही, लेकिन ६-७ बार खाना खिलाओ । तदुपरान्त बाबाश्री ने सफेद मलमल का कपड़ा लेकर उसमें थोड़े से चावल बाँधकर एक पोटली बनाई । किनारे को बटकर उसमें घी लगाकर बत्ती बना ली । पोटली उन्होंने अपने पेट पर रखी तथा बत्ती को जलाकर उसे काँसे के गिलास से ढँक दिया । गिलास उनके पेट से चिपक गया । यह क्रिया बाबाश्री ने ३-४ दिनों तक की और तब मुझसे कहा — देखो, तुम स्वस्थ हो गये । मैं कष्ट पा रहा हूँ । सचमुच, महीने भर में मैं बिल्कुल स्वस्थ और निरोगी हो गया।

भण्डारे का बुन्दिया अनन्त कैसे हो गया ?

— चौथमल तोषनीवाल

जलंधर रोग से त्राण मिलते ही मैं जी-जान से आश्रम के सेवा कार्यों में जुट गया । दुर्गापूजा का समय आया । महाप्रसाद की चर्चा हो रही थी । कलकत्ते से सापटग्राम पहुँचे भक्तों ने बाबाश्री से प्रार्थना की कि खिचड़ी-लाबरा का प्रसाद तो हर भण्डारे में आप खिलाते हैं, इस बार बुन्दिया-पूरी खिलाइये । भण्डार-घर की जिम्मेदारी मुझ पर थी । बाबा ने पूछा — बेसन कितना है भण्डार-घर में? मैंने कहा — ५० किलो । बाबा ने पूछा — ''बुन्दिया बन जायेगा?'' मैंने हामी भरी । खड़दह जूट मील (प० बंगाल) के मालिक केड़िया जी ने सन्देह प्रकट किया — बच्चा है, यह क्या जाने? कुछ पल मौन रहकर बाबाश्री ने फिर मुझसे पूछा — ''होबे तो''? अर्थात् हो जायेगा तो । मैंने फिर हामी भरी । कलकत्ते से आये चार रसोईयों ने भम्डारे के पहले रात को ही बुन्दिया बनाकर एक बड़ी पीतल की परात और एक ताँबे के टोप में रख दिया । सुबह बाबा ''स्कूल घर'' (रसोईघर) में पधारे । वहाँ पार्टीशन लगवाया । बुन्दिया पार्टीशन के पीछे रखवाया । पार्टीशन के दरवाजे पर पर्दा लगवाया । उन्होंने अपना लाल कमरबंद बुन्दिया के थाल के पास रख दिया । मुझे आदेश दिया — कोई इस पार्टीशन के भीतर न आये । तुम भीतर से बाल्टियाँ भर-भर के बुन्दिया बाहर रखते जाना । सांसारिक बुद्धि के हिसाब से मैंने सोचा कि यह बुन्दिया चलेगा कितनी देर ? भण्डारा शुरु हुआ । गुरुदेव के

आदेशानुसार मैं बाल्टियों में बुन्दिया डालकर बाहर रखता जाता । प्रयत्नपूर्वक बाल्टी थोड़ी खाली ही रखता था जिससे बुन्दिया अधिक देर तक चल सके । साढ़े बारह से लेकर प्रायः साढ़े चार बड़े तक भण्डारा चला । करीब आठ-दस हजार भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया । उसी एक परात से मैंने अपने हाथों से सैकड़ों बाल्टियाँ भरीं, परात में बुन्दिया तब भी बचा हुआ था । अगली सुबह बाबाश्री ने पूछा — बुन्दिया बचा है क्या ? वाह रे अर्न्तयामी प्रभु ! कैसे अनजान बन रहे हो !! पर मुँह से मैंने यही कहा — बाबा, परात में भी कुछ हैं तथा टोप का बुन्दिया ज्यों का त्यों रखा है । बाबा ने कहा — चाय-नाश्ते में सब भक्तों को और आश्रमवासियों को बुन्दिया खिलाओ । मैं अकेला नहीं, सारे भक्त सोच रहे थे कि बुन्दिया अनन्त कैसे हो गया?

वृन्दावनवास भी मिला और गोद में गोपाल भी !

— चौथमल तोषनीवाल

खेरली निवासी श्री केदारनाथ जायसवाल निःसन्तान थे । उन्होंने भरतपुर आश्रम के प्रख्यात वचनसिद्ध महात्मा (उ० प्रदेश) रामदास बाबा की सच्चे मन से सेवा की । एक दिन रामदास जी ने उनसे कहा कि जो मांगना चाहते हो, मांग लो । जायसवाल जी के मुख से बरबस निकल पड़ा — मैं बैराग्य और वृन्दावन में वास चाहता हूँ । बाबा ने तथास्तु कहकर उनकी

पत्नी से भी वही कहा । वे बोली कुछ नहीं, क्योंकि यह सर्वविदित था कि यह दम्पत्ति सन्तान प्राप्ति की कामना से रामदास जी की शरण में आई है, वे रो पड़ीं । रामदास बाबा ने कहा — छोकरी, सन्तान तो एक नहीं पचास दे दूँ । पर ये सांसारिक खिलौने हैं, टूट जायेंगे तो फिर रोयेगी । देख उस मन्दिर को । स्वयं वे बिहारी जी तेरे पुत्र बनेंगे । तत्पश्चात् जायसवाल जी वृन्दावन घूमने आये । केदारनाथ जी मिश्रा, टेलीफोन ऑपरेटन से उनका परिचय था । मिश्रा जी उन्हें बाबाश्री के दर्शनार्थ लीलाकुंज ले गये । वे पहुँचे ही थे कि मिश्रा जी के लिए आश्रम में किसी का फोन आया, मिश्रा जी को तुरन्त लौटना पड़ा । जायसवाल जी तीन-चार घंटे चुपचाप वहाँ बैठे रहे । हठात् बाबाश्री ने जायसवाल जी से कहा — आपका वृन्दावनवास भी होगा, वैराग्य भी । जायसवाल जी अवाक् थे । परिचय तक नहीं हुआ और मन की बात ताड़ ली । बस तभी से वे पति-पत्नी लीलाकुंज में रहने लगे । एक बार, रात्रि के समय बाबाश्री के साथ लीलाकुंज के हॉल घर में छः भक्त-खेरली दम्पत्ति, मैं और मेरी पत्नी, आश्रमवासी गुरूदास एवं धुबड़ी के सीताराम बांगड़ के मुनीम बजरंगलाल शर्मा का पुत्र किशन शर्मा — बैठे थे । बातें होते-होते ग्यारह साढ़े ग्यारह बज गये । केदारनाथ जी सोने के लिए अपने कमरे में चले गये । कुछ देर बाद मेरी पत्नी भी सोने चली गई । बाबा के सोने के बाद हम चारों वहीं हॉल में सो गये । सुबह चार बजे गुरूदास और मैं रसोईघर में गुरुदेव के लिए चाय बनाने चले आए । सोचा,

बहुत जल्दी आ गये हैं । चूल्हा जलाकर हम शरीर तापने लगे । समय होते ही चाय बनाई । लेकर हॉल घर के समीप पहुँचे कि बाबा का तुङ्गस्वर जय राधे गोबिन्द सुनाई पड़ा । हम थोड़ा चौंके, इतनी सुबह यह टेर क्यों ? खैर, हमने बाबाश्री को चाय अर्पित की । सुबह के करीब दस बजे, केदारनाथ जी ने मुझे पास बुलाकर कहा — जानते हो, आज कैसी अलौकिक घटना घटी है ? तुम लोग चाय बनाने चले गये । बाबाश्री ने उठकर हॉल-घर का दरवाजा बन्द किया । फिर अन्तर्धान हो गये । मेरी पत्नी ने देखा कि उसकी गोद में आठ-नौ मास का शिशु खेल रहा है । कुछ ही पल बाद, उसने बाबाश्री की जय राधे गोविन्द की पुकार सुनी । बाबा दरबाजा खोल रहे थे और गोद से शिशु ओझल हो गया था । मैंने पूछा — इस घटना का आशय क्या है ? उन्होंने बताया — हमारे गुरू रामदास बाबा ने वचन दिया था कि स्वयं गोपाल तुम्हारा बेटा होगा, वह वचन आज पूरा हुआ । बाबाश्री पूर्णब्रह्म हैं ।

उस निर्जन जंगल में दूर-दूर तक फोन था ही नहीं !

— चौथमल तोषनीवाल

केदारनाथ जी जायसवाल अपनी दाल-चावल की मिल सम्हालने खेरली जानेवाले थे । बाबाश्री ने उन्हें लौटते समय आश्रम की जरूरत का कुछ सामान एवं रामदास बाबा को साथ लाने का आदेश दिया । सामान लेकर जायसवाल जी आश्रम

लौटे । रामदास बाबा को न देखकर बाबाश्री ने पूछा — क्या हुआ, रामदास जी नहीं आये ? केदारनाथ जी ने कहा — बाबा, वे वृद्ध हैं । उत्सव के समय यहाँ भीड़ भी ज्यादा रहेगी । सर्दी भी बहुत है । अगली बार ले आऊँगा । अगले दिन, सुबह पहले एक ब्राह्मण के साथ बाबा रामदास लीलाकुंज पधार गये और जायसवाल जी से कहा — केदारनाथ तुम तो मुझे अपने साथ नहीं लाये । किन्तु बाबा ने मुझे आने के लिये फोन किया और मुझे आना पड़ा । जायसवाल जी सकते में आ गये । निर्जन वन में रामदास बाबा का आश्रम । खबर दी तो आखिर किसने ?

दर्शन किसी को हो रहे ते और कोई दूर बैठा हमें बता रहा था ।

— चौथमल तोषनीवाल

आश्रम-प्रवास के दौरान बाबा रामदास ने एक दिन केदारनाथ जी को कहा कि वे भगवान के दर्शन करना चाहते हैं । केदारनाथ जी ने उन्हें मन्दिर चलने को कहा । रामदास जी बोले कि मन्दिर तो अपने आश्रम में भी है । फिर उन्होंने केदारनाथ जी से पूछा — अच्छा, यह बताओ पागलबाबा तिलक-चन्दन का श्रृंगार कब करते हैं क्योंकि उस पल वे पूर्ण ब्रह्म रूप रहते हैं । वही समय था बाबा के श्रृंगार का और केदारनाथ जी उन्हें बाबाश्री के पास ले गये। बाबा के पूर्ण दर्शन से बाबा रामदास आनन्द विह्वल हो गये । बाबाश्री ने रासबिहारी मंदिर की ओर

संकेत करके कहा—आज गुरु महाराज को रासलीला दिखाओ । ब्राह्मण और रामदास जी रासलीला का आनन्द ले रहे थे . इधर केदारनाथ जी और मैं बाबाश्री के पास लीलाकुंज आश्रम में बैठे थे । बाबाश्री ने कहा — आज गुरु महाराज को गोपाल के दर्शन हो रहे हैं । हम पूरी तरह समझ नहीं पाये कि बाबा का आशय क्या है । शाम के समय बाबा रामदास ने कहा — भई केदारनाथ आज पागलबाबा ने हमें कन्हैया के दर्शन करा दिये । रास में कन्हैया भी नाच रहा था । मैं अभिभूत हो उठा । मैंने ब्राह्मण से कहा २ रुपये हों तो इस हारमोनियम बजानेवाले को दे दो । ब्राह्मण ने दो रुपये दिये । पर ताल टूट गई और कन्हैया भी ओझल हो गया ।

दीक्षागुरू कौन ? यह सन्देश जब मिट गया ।

— चौथमल तोषनीवाल

वृन्दावन-प्रवास के दौरान ही एक दिन रात्रि के समय रामदास बाबा बता रहे थे कि जो मनुष्य गुरुमंत्र नहीं लेता, उसके किए हुए धर्मानुष्ठान फलीभूत नहीं होते । मुझे दीक्षा नहीं मिली थी । ब्राह्मण ने कहा — रामदास बाबा से ले लो, पर मेरा प्रण था कि लूँगा तो पागलबाबा से ही, नहीं तो किसी से भी नहीं । रामदास बाबा ने कहा — बाबाश्री को कहते क्यों नहीं ? देर किस लिए ? दूसरे दिन कई बार मुझे बाबाश्री के सम्मुख होने का अवसर मिला, पर बात होठों तक नहीं आई । उस शाम, पुनः रामदासजी ने कहा—बात हुई । मैंने कहा — मौका ही नहीं

मिला । तब उन्होंने कहा — पर मेरी उनसे बात हो गई है । बाबा ने तुम्हारे लिए मंत्र बता दिया है, मैं तुम्हें दे दूँगा । ना कहने की हिम्मत मुझमें नहीं थी । मैंने गुरुमंत्र ले लिया और सोचता रहा कि न तो रामदास बाबा पूरे दिन नीचे उतरे और नही बाबा ऊपर आये । इनकी बात हुई तो कब । एक शंका मेरे हृदय में पलती रही कि आखिर यह गुरूमंत्र किसका दिया है । फिर मैं बिहार प्रान्त में रहने लगा । काम से कलकत्ते गया । ज्ञात हुआ कि बाबाश्री पधारे हुए हैं । मैं दर्शनार्थ पहुँचा । बाबाश्री का पहला वाक्य कुछ इस प्रकार था — आरती-विशाखा की शादी में तुम्हें भी सहयोग देना है क्योंकि तुम भी तो मेरे शिष्य हो । आरती, विशाखा-आश्रम में पली-बढ़ी हुई अनाथ लड़कियाँ थीं । उनकी शादी में सभी शिष्य-भक्त यथाशक्ति सहयोग देंगे—इसमें कोई सन्देह नहीं था । पर बाबा का यह कहना और जोर देकर कहना — तुमी ओ तो आमार शिष्य । मेरे मन में हर पल चुभनेवाला संदेह का काँटा बाबाश्री के दो शब्दों से तत्क्षण निकल गया ।

पूर्ण कृपा के लिए अपेक्षित है पूर्ण विश्वास !

— बैजनाथ राजगढ़िया

मेरे बड़े भाई का बेटा पाण्डु रोग से पीड़ित था । मूत्र विसर्जन बिल्कुल अवरूद्ध था । मैंने स्वप्न देखा कि बाबाश्री ने लाल रूमाल के झाड़े से मेरे भतीजे को पूर्ण स्वस्थ कर दिया है । मेरे बड़े भाई, भतीजा और मैं तीनों सापटग्राम पहुँचे । दो दिन बीत गये, कोई बात ही नहीं हुई । भैया ने क्रोध के आवेश में मुझसे कहा — इसकी हालत बिगड़ती जा रही है । तुम बाबा से बात तक नहीं कर पाये । मेरा मुँह

काला करवाओगे क्या । मैं खिन्न मन से बाबा के पास गया और गुहार की — क्या आप इसे ठीक नहीं कर सकते ? मेरा स्वप्न झूठा था । बाबाश्री ने मेरा हाथ पकड़ा और सीधे राधेगोबिन्द मन्दिर ले गये । उन्होंने कहा — मैं जितने दिन अन्दर से न निकलूँ, तुम्हें यही दरवाजे पर पहरा देना होगा । मैं काँप गया, आखिर कितने दिन ? पर मुँह से कहा — हाँ बाबा, मैं पहरा दूँगा । उन्होंने दरवाजा भीतर से बन्द किया, मैं बाहर हरे राम, हरे कृष्ण का जप करने लगा । इसी बीच मन्दिर के पट खुले । दो तुलसी पत्ते लिए बाबा बाहर आये । पत्तों को मेरे भतीजे के मुँह में डाला । उसका दाहिना अंगूठा अपने मुँह में ले लिया और मुझे कहा — ऐ बैजू, तुम्हारा स्वप्न सच ही था । पर तीन दिनों की यह प्रतीक्षा जरूरी थी क्योंकि तुम्हारे बड़े भाई को मुझ पर विश्वास नहीं था । जिसे विश्वास न हो, उसे मेरे पास न लाओ । जाओ, तुम्हारा भतीजा पूर्णतः निरोग हो गया है । इस घटना के दस मिनट बाद ही भतीजे का मूत्रावरोध बिल्कुल दूर हो गया और कुछ ही दिनों में वह पूरी तरह स्वस्थ हो गया ।

कहाँ से नौकाएँ आई और कहाँ से बाँस ?

— बैजनाथ राजगढ़िया

सन् १९६४ की घटना है । तब बाबा मेरे निवास स्थान पर ठहरे हुए थे । रानाघाट से बाबा के एक शिष्य कुण्डू बाबू आए और बाबा से रानाघाट चलने का अनुरोध करने लगे । वादे के अनुसार तीन दिन बाद बाबाश्री रानाघाट पहुँचे । वे भक्तों के साथ बाहर घूमने निकले और एक बड़ा खुला मैदान देखकर कुण्डू बाबू से कहा कि मैं यहाँ ५६ प्रहरों का नाम संकीर्तन

करना चाहता हूँ । कुण्डू बाबू हतप्रभ हुए और बोले कि इतना बड़ा पण्डाल बनाने के लिए न यहाँ बाँस मिलेंगे और न डेकोरेटर । अगले दिन सुबह रानाघाट की चुरनी नदी में बाँस से लदी दो नौकाएँ पहुँची । पूछने पर नाविकों ने कहा पागलबाबा ने ये बाँस मँगवाए हैं । उन्हें खबर कर दीजिए । कुण्डू बाबू के अचरज की कोई सीमा नहीं । जब कलकत्ते से कोई सम्पर्क ही नहीं हुआ, तो ये नौकाएँ आई कैसे, किसने भिजवाये बाँस ? जो हो, फिर कलकत्ते से तिरपाल भी आया, डेकोरेटर भी, अधिवास पूजा हेतु प्रभुपाद प्राणकिशोर गोस्वामी भी । छप्पन प्रहरों का अभूतपूर्व रसमय नाम संकीर्तन हुआ ।

मृतप्राय महिला से कहा – 'ओ माँ उठे बोसो ।'

— बैजनाथ राजगढ़िया

यह घटना रानाघाट के अखण्ड नाम-संकीर्तन के अन्तिम दिन की है । मैं और सत्यनारायण जी मुरारका बाबाश्री के आदेशानुसार सातवें दिन रानाघाट पहुँचे । कुछ दूरी पर स्थित एक बस्ती से कुछ लोग हाथों में एक महिला को उठाये पंडाल में आये । पूछने पर पता चला कि असाध्य रोग से पीड़ित यह औरत मरनेवाली है । डाक्टरों ने जवाब दे दिया है । इसकी सास ने कहा कि अन्त समय में नाम संकीर्तन सुनने से इसे मोक्ष मिलेगा । इसी कारण वे लोग उसे वहाँ ले आये थे । बाबाश्री ने अलौकिक स्वर में कहा — मेरे महोत्सव के बीच जीव-जन्तु नहीं

मर सकता, यह तो इन्सान है । वे दौड़कर महिला के पास आये और उसकी बाई कनिष्ठ अंगुली को पकड़कर जय राधे गोविन्द की उच्च स्वर में पुकार की । तीन बार अपनी लाल रूमाल से झाड़ा दिया और कहा — 'ओ माँ, उठे बोसो । अर्थात् ऐ माँ, उठकर बैठो। महिला तत्काल खड़ी हो गई । बाबाश्री के आदेशानुरूप उसने समूचे पण्डाल की तीन बार परिक्रमा की । बस फिर क्या था ? सारा रानाघाट उमड़ पड़ा, अलौकिक पागलबाबा की एक झलक पाने हेतु ।

सम्पर्क सूत्र : (०३३) २५५४-८८४१

जगबीती जब आपबीती बनी, तब जागी पूर्ण भक्ति !

—हरि राम तोदी

लगभग सन् १९५६-५७ से ही, जब भी बाबाश्री का कलकत्ते आगमन होता, मैं उनके दर्शनार्थ जाया करता था। १९६२ में तारासुन्दरी पार्क में अष्टग्रह योग के समय आयोजित दिव्य महाप्रसाद का प्रत्यक्षदर्शी मैं भी था। बाबा के सान्निध्य में परम आनन्द मिलता था। उठने की इच्छा नहीं होती थी। पर, तब भी मुझे लगता था कि बाबा के प्रति मेरी भक्ति सम्पूर्ण नहीं है, कुछ कमी उसमें जरूर है। मैं मन ही मन बाबाश्री से प्रार्थना किया करता था कि हे बाबा इस नाचीज को पूर्ण भक्ति और पूर्ण विश्वास में सक्षम बना दो। रोजाना की तरह एक दिन बाबा के साथ जी-भर समय बिताकर मैं अपने घर लौटा। रात हो गई थी।

मैं सोने का उपक्रम कर रहा था। मुझे लगा कि शंकर भगवान सामने खड़े हैं। किन्तु यह अस्पष्ट, धुँधला-सा था। मैंने आँखों को कई बार मला। धीरे-धीरे शिव का साक्षात् स्वरूप मेरी आँखों के सामने था। मैं खुली आँखों से भगवान शंकर को देख पा रहा था कि एकाएक उसी जगह केवल बाबाश्री दिखने लगे। मैं उठ बैठा। अगली सुबह उतावला-सा जल्दी-जल्दी बाबाश्री के दर्शनार्थ पहुँचा। बाबाश्री ने आँखों के इशारे से हँसकर पूछा कि दर्शन हुए? मैंने आह्लाद से भरकर कहा—''हाँ बाबा हुए।'' यह थी पूर्ण भक्ति और अटल विश्वास की नई शुरूआत।

चमत्कारों की एक लड़ी

—हरि राम तोदी

जसीडीह में अक्षय तृतीया के समय महोत्सव का आयोजन हुआ। 'गांधी पार्क' में विराट् पंडाल बना। भोजन रखने-परोसने की सुविधा के लिये चारों ओर चार शिविर बने। जसीडीह इतनी कम आबादी वाला क्षेत्र, उस अनुपात में पंडाल का आकार कई गुणा। ''बाबाश्री, इतने लोग शायद ही आएं'' - भक्तों ने शंका जाहिर की। उन्होंने कहा - ''मैंने तैंतीस कोटि देवी-देवताओं को बुलाया है। राधेरानी भी अपनी सखियों के साथ पधारेंगी।'' इन बातों के गूढ़ अर्थ को समझ पाना मुश्किल था। उधर देवघर के एस०पी० ने आपत्ति कि इतना बड़ा भण्डारा चलाने की अनुमति सरकार नहीं देगी। जल की समस्या सारे अंचल में थी। समझाने

पर भी एस०पी० नहीं माना। दो-तीन दिन बाद ही समाचार मिला कि उस एस०पी० ने बाबाश्री से वचन लिया कि सारे आयोजन की जिम्मेदारी बाबा अपने ऊपर लेंगे, और फिर अनुमति दे दी। उत्सव शुरू हुआ। अप्रत्याशित भीड़ थी। सुबह से शाम तक भण्डारा चलता। आने-जानेवालों का ताँता लगा रहता। एक दिन एक बच्चा भीड़ की धक्का-मुक्की में फँसकर गिर पड़ा। अनजाने में लोग उसे पैरों तले कुचलते हुए बढ़ते रहे। लड़का बिल्कुल मरणासन्न था, बल्कि मर ही गया था। उसकी माँ चीख-चीखकर विलाप कर रही थी कि हम प्रसाद की इच्छा से आये थे, बाबा के दरबार में यह कैसा अनर्थ हो गया? सूचना मिलते ही बाबाश्री बच्चे के पास आये। उसकी छोटी अँगुलू को पकड़कर दबाया। लाल रूमाल से झाड़ा दिया। फिर उसकी माँ से कहा - ''होश आने पर इसे पेट-भर प्रसाद खिलाना।'' बच्चा स्वस्थ हुआ और उसने प्रसाद भी ग्रहण किया।....एस०पी० का अचानक ट्रान्सफर कैसे हो गया? इतनी भीड़ इतने दिनों तक कहाँ से आई और ये लोग कौन थे? मृतप्राय बच्चे को तुरन्त होश कैसे आया? यह गूढ़ महिमा मैं भला क्या समझता? मैं तो मात्र एक श्रद्धालु दर्शक की तरह चमत्कारों को देख रहा था।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

गरीब जमनी की तकदीर पढ़ दी !

—हरि राम तोदी

एक बार सौभाग्यवश बाबाश्री मेरे घर पर ठहरे थे। मकान में रहने वाले लोग बाबाश्री के दर्शन करने आते थे। हमारे पड़ोस में रहने वाली 'जमनी'-निहायत गरीब थी और सुन्दर भी नहीं थी। उसने बाबाश्री के चरणों में प्रणाम किया। बाबाश्री ने कहा- ''तुम्हारा विवाह धनाढ्य परिवार में होगा।'' मुझे मालूम था कि जमनी के पिता की नौकरी छूट चुकी थी। घर में खाने-पीने तक की तकलीफ रहती थी। बाबा की बात पर बड़ा अचरज हुआ। सन् १९७२ में हम बड़ाबाजार से साल्ट-लेक चले आए। सन् १९७४-७५ के लगभग सत्यनारायण पार्क के पास मैंने देखा कि एक युवती खड़ी मेरी ओर देखकर मुस्करा रही थी। काफी अच्छे गहने-कपड़े पहनी थी। वह बोला-''चाचा, मैं जमनी हूँ।'' स्मरण हो आया बाबा के ब्रह्मवाक्य का और सोचा कि बाबाश्री ने तो वर्षों पहले ही उसकी तकदीर पढ़ दी थी।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २३३७ ३०५२

हँसते-हँसते जगजाहिर किया चोरी का राज !

—शारदा टिबड़ेवाल

सन् १९६२ की घटना है। मेरी नई-नई शादी हुई थी। बड़े चाव से सास-ससुर मुझे बड़झाड़ आश्रम ले गये। बाबाश्री ने 'नवल बहू' का प्रेममय सम्बोधन मुझे दिया। अगले दिन भण्डारा

होने वाला था। उसके लिए जो दूध-दही भण्डार घर में आयेगा, उसकी सँभाल का भार मुझे सौंपा गया। दही के पाँच छः बड़े-बड़े कुण्डे भण्डार-घर में रखे गये। बचपन से ही मैं दूध-दही की मलाई की शौकीन थी। दो-तीन कुण्डों में से ऊपर की मलाई निकालकर मैंने अलग रख दी। भोग और भण्डारे के बाद जब हमारे भोजन का समय हुआ तब मैंने बड़े चाव से वह मलाई खायी। अगले दिन, मुझे उल्टियाँ शुरू हो गईं। बुखार चढ़ने लगा। आँतों में पीड़ा थी। अम्लपित्त की शिकायत हो गई। भूख बिल्कुल बन्द हो चुकी थी। इसी हाल में मैं कलकत्ता लौटी। अनेक उपचार किये, पर कोई फायदा नहीं हुआ। तकलीफ सहते तीन महीने बीत गये। इसी मध्य बाबाश्री कलकत्ते पधारे। सास-ससुर जी मुझे बाबा के पास फतेहपुरिया हाउस ले गये। सारा हाल कह सुनाया। भक्तों से खचाखच हॉल भरा था। बाबाश्री तिलक-चन्दन कर रहे थे। उन्होंने एक नजर मेरी ओर देखा, और फिर हँसते हुए मेरे ससुर जी से कहा - ''ओरे मोहन, सुनो, शारदा आमार भण्डार घर थेके चुरि करे छे।''-अर्थात् मोहन सुनो, शारदा ने भण्डार से चोरी की है। मेरी सारी व्याधि तो उसी पल दूर हो गई-पर बाबा के अलौकिक स्वरूप की एक अनुभूति पुनश्च हुई।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

जब दवा-दारू टोने-टोटके सब निष्फल हो गये !

—शारदा टिबड़ेवाल

सन् १९७० की बात है। सार्दियों का मौसम था। दोपहर डेढ़ बजे के लगभग सासुजी की आवाज सुनकर मैंने करवट लेते हुए पलंग से उठने का उपक्रम किया। अजीब हादसा हुआ। मुझे दिख रहा था कि सामने जमीन पर एक अर्थी पड़ी है। मैं भय और आशंका से रोते-रोते बेहाल हो घई। घर के लोगों ने उसी समय दवा-दारू, झाड़-फूँक-सभी उपाय किये। पर मेरी स्थिति दूसरे दिन शाम तक यथावत् बनी रही। वही दृश्य आँखों के सामने हर पल रहता। यहाँ कलकत्ते से मेरे पति 'नवल जी टिबड़ेवाल' ने अपने पिता को फोन किया जो सौभाग्यवश वृन्दावन में बाबाश्री के पास ही गये हुए थे। बाबाश्री ने आदेश दिया-'उसे फौरन वृन्दावन ले आओ।' उसी दिन रात्रि के दस बजे हम वृन्दावन पहुँच गये। बाबाश्री ने कहा-'नवल, कल सुबह चार बजे शारदा को लेकर मेरे पास आना।' सुबह के चार बजे कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। हम दोनों बाबाश्री के कमरे में पहुँचे। सिगड़ी जल रही थी। सिगरेट से सिगड़ी की राख को गुरूदेव ने दो-तीन बार कुरेदा और हँसते हुए बोले-'मुक्त! मुक्त!! उसी पल मैं सामान्य और प्रसन्नचित्त हो गई। फिर कभी वह भयावह दृश्य आँखों के सामने नहीं आया।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २४६६ ६१७५

हजारों हाथ खींच रहे थे, पर रथ रूक गया!

—चन्द्रकान्त रूँगटा

यह घटना सन् १९६५ में रथयात्रा के समय सापटग्राम में घटी। उस समय बाबाश्री सवारी के दौरान सोलह पहियों के रथ पर स्वयं विराजमान होते थे। बाबाश्री का आदेश था कि रथ से दस हाथ छोड़कर रस्सी पकड़ी जाय। धूम-धाम से सवारी निकली। हजारों श्रद्धालुओं में मैं भी शामिल भी। रथ मजे से आगे बढ़ रहा था। तभी एक आठ-दस वर्ष के बालक ने दस हाथ छोड़ी गई जगह को खाली जानकर भीड़ में प्रवेश कर वहाँ से रस्सी को पकड़ लिया। रस्सी पकड़ने के साथ ही उसका पैर रास्ते पर जमा कीचड़ में फँसा, लड़का जमीन पर गिर पड़ा। बढ़ता हुआ रथ बच्चे के बिल्कुल करीब आ गया। तभी अचानक 'जय राधे गोविन्द' का नाद करते हुए बाबाश्री रथ से कूद पड़े। रथ रूक गया। रथ के पास घटी इस घटना से बिल्कुल अनजान हजारों भक्त पहले की तरह रथ खींचते जा रहे थे। किन्तु रथ टस से मस न हुआ। बाबाश्री ने बच्चे को उठाया, उसके प्राण बचा लिए और तब जाकर रथ आगे बढ़ा।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २४६६ १०२६

परीक्षा की सुबह ट्रेन पहुँच ही गयी!

—सत्य कुमार टिबड़ेवाल

यह उस समय की घटना है जब बाबाश्री आसाम गये हुए

थे। हमने बाबाश्री को खबर की कि 'पारो बाई' को हठात् लकवा मार गया। पारो बाई अर्थात् पार्वती देवी भोजनगरवाला मेरी सबसे बड़ी बहन थी। उनका विवाह हुए १८-१९ वर्ष हो गये, पर कोई सन्तान नहीं हुई। बाबाश्री की कृपा से उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। बाबाश्री ने भोजनगरवाला दम्पत्ति को यह आदेश दिया था कि यह पुत्र जब तक १३ वर्ष का नहीं होता, यह मेरा रहेगा। आपका अधिकार १३ वर्ष के बाद होगा। एक दिन मेरा यही सात वर्षीय भांजा शरारत कर रहा था। दीदी ने उसे पीटा। यह एक सामान्य सी घटना थी जिसकी जानकारी भला किसी को क्या होती? उधर आसाम में लकवे की बात सुनते ही बाबाश्री ने दीदी के लिए एक जड़ी भेजी और साथ में यह चेतावनी भी- 'बच्चे पर बल प्रयोग कभी नहीं करना है।' दीदी को अपनी भूल का अहसास हुआ। जड़ी धारण करने के बाद वे शनैः-शनैः निरोग भी हो गई।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २२४१ २०९८

इतना अन्न धन आया कहाँ से?

—प्रेम कुमार फतेहपुरिया

अष्टग्रह का समय था। बाबाश्री ने कलकत्ते के तारासुन्दरी पार्क में ५६ प्रहर के अखण्ड कीर्तन एवं भण्डारे का आयोजन करने की ठानी। उन्होंने मेरे पिताजी श्रीनिवास जी फतेहपुरिया से कहा-'इस आयोजन का व्यय वहन आपको करना होगा। इस निमित्त किसी से कुछ माँगना नहीं है, स्वेच्छा से जो दे, उसी से

लेना है।' आयोजन ७ दिनों का था, पर चला २१ दिनों तक। खूब हरिनाम हुआ। खूब भण्डारा चला। चावल-दाल आदि की जैसे वर्षा हो रही थी। भण्डारा भरता ही जा रहा था। इक्कीसवें दिन पूड़ी-सब्जी और बुंदिया का भणाडारा हुआ। किसीवस्तु का अभाव होना तो दूर की बात रही, अनाज इतना बच गया कि तीन ट्रकों में लदवाकर उन्हें बाबाश्री के आश्रमों में भेजना पड़ा। यह कौतुहल हर प्रत्यक्षदर्शी भक्त के हृदय में था कि इतना अन्न-धन आया तो कहाँ से आया?

महज एक सेव से लाइलाज सिर-दर्द गायब?

—प्रेम कुमार फतेहपुरिया

मेरा अनुज 'गोपाल फतेहपुरिया' लम्बे अर्से से भयंकर सिर-दर्द से पीड़ित था। बड़े-बड़े डाक्टरों-विशेषज्ञों से इलाज करवाने के बावजूद कोई फायदा न हुआ। श्री मोतीलाल जी खेमका मेरे पिताजी को बाबाश्री से मिलवाने मोहनलाल जी चोखानी के निवासस्थान पर ले गये। बाबाश्री ने पिताजी से उनके आने का कारण पूछा और फिर कहा-'कल सुबह ही एक फल खरीदना, मोल भाव नहीं करना और फल लेकर मेरे पास आना।' बाबाश्री ने दिव्य मंत्रों से उस सेव को अभिमंत्रित किया और गोपाल को खिला देने का आदेश दिया। उसे खाते ही मेरा अनुज पूर्णतः निरोग हो गया। जो पीड़ा कलकत्ते के बड़े-बड़े डाक्टर दूर करने में असमर्थ रहे, वह महज एक सेव खाते ही छू-मंतर हो गई।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २२४१ २०९८

हिलने तक में असमर्थ नौ मंजिल कैसे चढ़ा ?

—साँवरमल सूतावाला

मैं और मेरी पत्नी वृन्दावन स्थित लीलाधाम के दुर्गा मन्दिर में बाबाश्री के आदेश से कात्यायनी पूजा (दुर्गापूजा) कर रहे थे। मेरे दामाद और पुत्री भी वहाँ आए थे। मेरे दामाद को इतना भयंकर 'सायटिका पेन' था कि वे एक कदम भी अपने-आप चल नहीं पाते थे। बाबाश्री के बुलाने पर दो आदमियों का सहारा लेकर वे बाबा के पास, बाबा के कमरे में पहुँच गये। बाबा ने उन्हें एक झाड़ा दिया और कहा-'तुम खुद चलकर सामने मन्दिर की नौंवी मंजिल तक जाओ।' मेरे दामाद बिना किसी की सहायता लिये नौ मंजिल ऊपर चढ़े भी और उतरे भी। फिर सीधे दुर्गामन्दिर आये। हम उन्हें अकेले आते देखकर हैरान हुए। हमें तो कुछ पता नहीं था। आँखों को खुद पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह दिन और आज का दिन मेरे दामाद पूर्णतः स्वस्थ हैं।

सम्पर्क सूत्र : फोन ९३३००३९५१०

मेरे हृदय का द्वन्द्व उन तक पहुँचा कैसे ?

—राजकुमार चौधरी

सन् १९७२ की घटना है। होली उत्सव में शरीक होने के लिए मैं पहली बार वृन्दावन गया। उस समय तक बाबाश्री के अन्यान्य भक्तों से मेरा विशेष परिचय नहीं था। बाबा एक दिन लीलाकुंज के भीतरी भाग में भक्तों के साथ बैठे थे। वे कह रहे

थे-'इस वर्ष बासंती पूजा (दुर्गा पूजा) हेतु माँ दुर्गा की प्राण-प्रतिष्ठा की जायेगी।' उन्होंने माँ दुर्गा के आभूषण के लिए श्रीगोविन्दराम जी भिवानीवाला से अनुरोध किया। श्रीनिवास जी फतेहपुरिया को माँ लक्ष्मी के आभूषण देने के लिए कहा गया। मैं लीलाकुंज के बाहरी भाग में आकर बैठा और सोचने लगा कि मुझे बाबा कहते तो मैं भी इन दोनों में से किसी एक देवी को आभूषण अर्पित करता। अब कोई देवी बची ही कहाँ? मैं बनावऊँगा भी तो किस देवी के लिए? इसी बीच किसी की आवाज सुनाई दी कि बाबा गौहाटी वाले राजू को भीतर बुला रहे हैं। मैं भीतर गया। जाते ही गुरूदेव ने कहा-'दादा, शक्ति-भक्ति, विद्या-कला, मान-ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी है-माँ शारदा! तुम्हें उनके गहने बनवाने हैं।' मेरे अन्तर्चक्षु खुले और देखा कि मेरे गुरूदेव सामान्य सन्त नहीं स्वयं परमात्मा हैं।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३६१) २५२०६३१

गुरूदेव की दृष्टि आज भी तुम पर है!

—श्याम जालान

सन् १९८८ की घटना है। बाबाश्री के निर्वाण के आठ वर्ष उपरान्त जनवरी माह में वृन्दावन में प्राण-प्रतिष्ठा का उत्सव होनेवाला था। पिताजी के आदेशानुसार मुझे बाबा के दरबार में हाजिर होना था। पर मैं वृन्दावन नहीं गया। दो-तीन दिन बाद ही अचानक मेरा मुँह एक तरफ से बिल्कुल टेढ़ा हो गया। कलकत्ते के डाक्टर इसका इलाज नहीं कर पा रहे थे। तब बाबाश्री की दी

हुई लाल रूमाल को मेरे सिर पर रखा गया और मैंने बाबाश्री की दी हुई लाल रूमाल को मेरे सिर पर रखा गया और मैंने बाबाश्री की तस्वीर के सामने संकल्प किया कि होली उत्सव पर मैं वृन्दावन जरूर आऊँगा। उसी पल मेरा चेहरा एकदम पूर्ववत् हो गया।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २५७६ २१०४

वे साधारण मानव नहीं थे !

—छेदी लाल पोद्दार

यह सन् १९६० की घटना है, जब मैं व्यापार तथा मनहर प्रकार से घोर यन्त्रणा से त्रस्त था। श्री तेजपाल शर्मा (बाबाश्री के अनन्य भक्त) के मुख से बाबाश्री की अलौकिक महिमा का बखान सुनकर मैं घर से बिना किसी को बताए सापटग्राम के लिए रवाना हुआ। दो फूल मालाएँ खरीदने की तीव्र मनोकामना थी, किन्तु फकीराग्राम से सापटग्राम के छः किलोमीटर रास्ते में कहीं भी फूलमालाएँ नहीं मिली। काश! बाबाश्री के चरणों में फूलमालाएँ अर्पित कर पाता! हताश मन से मैं बाबाश्री के दर्शनार्थ पहुँचा। बाबा स्नानादि से निवृत्त होकर चन्दन का शृंगार कर रहे थे। मैंने सोचा कि मालाएँ खरीद पाता तो यही उपयुक्त समय भी होता-मैं बाबाश्री को भेंट कर पाता। कुछ ही क्षण उपरान्त मैंने देखा कि एक वृद्ध महिला आई है और दो फुलमालाएँ बाबा को पहनाने के लिए हाथों में लाई है। मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा जब बाबाश्री ने मेरी ओर

इशारा करते हुए वृद्धा से कहा-'मालाएँ इसे दो। यह पहनायेगा।' अन्तर्यामी प्रभु ने मेरी मनोकामना पूर्ण की। यह विश्वास हृदय में दृढ़तापूर्वक बैठ गया कि यह कोई साधारण मानव नहीं है, बल्कि ईश्वर का ही प्रतिरूप है।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २२४१ ६२१५/१३६६

मुड़े हुए हाथ-पाँव एक झाड़े से सीधे हुए?

—साँवरमल हरभजनका

यह सन् १९६५ की घटना है। मेरी बड़ी बेटी मंजू तब पाँच वर्ष की थी। अचानक उसके चारों हाथ-पैर मुड़ गये। कलकत्ते में लगभग साल-भर इलाज कराने के बावजूद भी लेशमात्र फायदा नहीं हुआ। हार कर उसे बाबाश्री के पास वृन्दावन आश्रम ले जाया गया। बाबाश्री ने अपनी लाल रूमाल से एक झाड़ दिया। सात ही दिनों में वह पूर्णतः स्वस्थ हो गई। आज तक उसे फिर वैसी कोई तकलीफ नहीं हुई।

आश्रम में प्रवेश मात्र से आँखों की ज्योति लौट आई!

—रासबिहारी हरभजनका

सन् १९७३ की यह घटना है। मेरे ताउजी (श्री विश्वनाथ जी हरभजनका) की बड़ी पुत्री जब कक्षा ८ में गई, तब उसकी आँखों की ज्योति धीरे-धीरे कम होती गई। स्थिति यहाँ तक

बिगड़ गई कि उसे एक फुट दूर की चीजें भी नजर नहीं आती थीं। एक ही सहारा बचा था-बाबाश्री का और हम सपरिवार वृन्दावन आश्रम जा पहुँचे। आश्रम में पदार्पण के साथ ही उसे २०० फीट दूर की चीजें स्पष्ट दिखाई देने लगीं। तीन दिन बाद बाबाश्री ने उसे झाड़ा दिया। उसी दिन वह सहेलियों के साथ मथुरा में पिक्चर देखने गई। आश्चर्य की बात तो यह है कि आज तक उसे चश्मे की जरूरत ही नहीं पड़ी।

सम्पर्क सूत्र : फोन ९३३१०००९८७,
(०३३) २६६४ ५२१३

''वृन्दावने सती होबे''
-कहा था और वही हुआ!

—बसंत कुमार फतेहपुरिया

सन् १९७७ की यह बात है। मेरा अनुज संत कुमार फतेहपुरिया वृन्दावन आश्रम गया हुआ था। कलकत्ते लौटते वक्त उसने बाबाश्री से अनुनय की कि 'माता-पिता' का स्वास्थ्य ठीक हो जाए-ऐसी कृपा करें। बाबाश्री ने मेरी माता के सम्बन्ध में इतना ही कहा-'तोमार माँ वृन्दावने सती होबे!' (उन्होंने किस संदर्भ में यह बात कहीं, भाई को ध्यान नहीं है।) तदुपरांत सन् १९७८ में पिताजी के पक्षाघात से पीड़ित होने पर मैं सपत्नीक वृन्दावन की 'बासन्ती पूजा' के संकल्प का निर्वाह करने लगा। सन् १९८० का साल था। एकाएक मेरी माता गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गई। इसी मध्य 'बासन्ती पूजा' करीब आ गई। इधर

मेरे पिताजी पक्षाघात से ग्रस्त थे, उधर माता मेरे साथ वृन्दावन की उक्त पूजा में जाने का हठ करने लगीं। प्रसंगतः यह उल्लेख भी आवश्यक है कि पिताजी को गहन 'ब्रेन हैम्रेज' हुआ। कलकत्ते के सुप्रसिद्ध डाक्टर 'शीतल घोष' (सांतरागाछी) ने कहा 'इनके प्राण एक-आध घंटे ही और हैं। बिस्तर से नीचे उतार दें।' तब मेरी माता ने हम सबके समक्ष कहा-'अगर मैंने माँ दुर्गा की सच्ची भक्ति की है तो आज मुझे यह फल चाहिये कि मैं सधवा मर सकूँ।' पिताजी की स्थिति सुधरने लगी और माताजी की बिगड़ती गई। माँ के हठ से मजबूर हमलोग संकल्पानुसार 'बासन्ती पूजा' करने हेतु वृन्दावन आश्रम पहुँचे। बाबाश्री के आदेश से माता जी को वृन्दावन के टी०बी० सेनेटोरियम में भर्ती कर दिया गया। मैं आश्रम में सपत्नीक पूजा करने लगा। षष्ठी के दिन आश्रम में खबर आई कि मेरी माता की हालत बहुत गंभीर है। बाबाश्री ने कहा कि 'अभी तुम्हारी माँ को कुछ नहीं होगा, किन्तु जब खबर आई है तो अस्पताल जाओ, तुम्हारे आसन से पूजा मैं करूँगा।' मैं अस्पताल पहुँचा और देखा काफी भीड़ है, माँ निष्प्राण अवस्था में है। मुझे देखते हू उसने आँख खोली और पूछा-'तुम यहाँ? अधिवास पूजा करके आये हो?' यही मेरी माता के अन्तिम वाक्य थे। ज्यों-ज्यों पूजा समापन की ओर बढ़ रही थी, मेरी माता की स्थिति और बिगड़ रही थी। पर साँसें थीं, धड़कन भी थी! २६ मार्च १९८० आई दशमी तिथि की सुबह बाबाश्री ने मुझसे कहा-'पूजा होय गेलो। दुर्गा मन्दिर जाओ। गाँठ छाड़ा कोराओ आर शान्ति जल नाओ तोमार मायेर काछे जाओ। तोमार माँ बेशी खोन नेई। ओशीम पुन्यवती छिली जे वृन्दावन धामे चोले आशलो। आर एई माटी पेयेछे।

एर आयु आगेइ शेष होय गिये छिलो। स्वामी थाकते से जाबे।' सुनते ही मैं, मेरी पत्नी और छोटी बहन फूट-फूटकर रो पड़े। आखिर दोपहर २.३० बजे एकादशी तिथि लगते ही माँ के प्राणपखेरू स्वर्गारोहण कर गये। हमें बाद में यह भी पता चला कि बाबाश्री ने अन्य सभी भक्तों को बता दिया था कि मेरी माताजी की आयु शेष हो गई है। इस प्रकार सन् १९७७ का यह ब्रह्मवाक्य तीन वर्ष उपरान्त फलीभूत होकर रहा।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २३५८ ४०१७/
२५९१ २३७४

डाक्टरों ने दाँतों तले अँगुली दबाई!

—शंकर जालान

सन् १९९२ की घटना है। मेरी माता 'भजनी देवी' (धर्मपत्नी-स्व० सीताराम जी जालान) को अचानक ब्रेन हैम्रेज हो गया। कलकत्ता के डाक्टरों के सारे प्रयत्न नाकाम सिद्ध हो रहे थे। मेरे पिता बाबाश्री के शिष्य एवं परम भक्त थे। माताजी की ऐसी हालत देखकर वे बहुत हताश-निराश हो गये। उसी रात स्वपन में बाबाश्री ने उन्हें दर्शन दिए और आश्वासन भी- 'आमि आछि! कोनो चिन्ता करो ना।' अगले दिन से ही माताजी की स्थिति में आश्चर्यजनक सुधार होने लगा। कलकत्ते के बड़े-बड़े डाक्टर-जिनकी देख-रेख में उनका ऑपरेशन करवाया गया। तब से मृत्युपर्यन्त माताजी को किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट नहीं हुआ।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २२४७ २६८०

'वुडलैण्ड नर्सिंग होम' के डाक्टर-नर्स चमत्कृत हो गए!

—गौरीशंकर भिवानीवाला

यह घटना सन् १९६९ की है। मेरी पत्नी को प्रसव होने वाला था। बाबाश्री ने पहले ही कह दिया था कि घर में एक छोटी चुहुया अर्थात् कन्या सन्तान आयेगी। साढ़े सात माह में ही अस्पताल जाना पड़ा। बच्ची का जन्म हुआ। नवजात शिशु में धड़कन या हरकत न होने के कारण उसे मृत घोषित कर दिया गया। तत्क्षण मेरी पत्नी 'चाँद भिवानीवाला' को होश आया। पूछा कि 'क्या हुआ?' जबाब मिला, 'मृत कन्या'। उसने कहा- 'मेरे तकिये के नीचे लाल रूमाल है, उसमें बच्ची को तुरन्त लपेटिये।' डाक्टर-नर्सों ने वैसा ही किया। तुरन्त बच्ची हिलने लगी। धड़कन भी सुनाई देने लगी। फिर क्या था? सारे अस्पताल में बच्ची की प्राण-रक्षा के लिए हलचल-सी मच गई। इन्क्यूबेटर इत्यादि की तुरन्त व्यवस्था की गई। इस अभूतपूर्व घटना को देखकर 'वुडलैण्ड नर्सिंग होम' के सारे डाक्टर-नर्स चमत्कृत थे। बच्ची को वे 'लाल बेबी' के नाम से सम्बोधित करते थे।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २३५० ९२०९

तमसो मा ज्योतिर्गमय.....

—बसन्त कुमार फतेहपुरिया

सद्गुरू के श्री चरणों में मेरा शत्-शत् प्रणाम! जब भी बाबाश्री के समक्ष नतमस्तक होता हूँ, मेरा हृदय कई प्रश्नों से व्याकुल हो उठता है। मैं सोच में पड़ जाता हूँ - जिन बाबाश्री को ईश्वर जानकर हम नित्य पूजते हैं, उनकी बताई हुई कितनी बातों का हम अनुसरण करते हैं? उनके कितने सपनों को हमने साकार किया?

अलौकिकता की दिव्य मूर्ति बाबाश्री ने अपने सरलतम उपदेशों के द्वारा हमारे लौकिक जीवन को उन्नत बनाने का प्रयास किया। माता-पिता ही भगवान हैं, स्त्री का एकमात्र भगवान उसका पति है-इस प्रकार गृहस्थ जीवन की महत्ता प्रतिपादित करते हुए उन्हें मानव सेवा को मनुष्य का मूल धर्म बताया। साथ ही भजन-संकीर्तन को इस युग में भगवत्प्राप्ति एवं आनन्द प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन बतलाया। बाबाश्री की इसी भावना से प्रेरित होकर आज से ३९ वर्ष पूर्व उनके आदेशानुसार इस मण्डल की स्थापना की गई। बाबाश्री की कृपा से यह मण्डल निरन्तर भजन-कीर्तन करता आ रहा है। किन्तु बाबाश्री के महत्तर लक्ष्यों की पूर्ति तभी सम्भव है जब हम जन-सेवा को भी अपना परम धर्म बनायेंगे।

हमारे गुरूदेव मानव सेवा को ही सच्ची ईश्वर सेवा मानते थे। इसके प्रमाण हैं-सापटग्राम में स्कूल की स्थापना जिसमें

अभावग्रस्त बच्चे निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर सकें और वृन्दावन में एक ऐसे अस्पताल के निर्माण की नींव रखी जिसमें निम्नवर्गीय रोगियों को सहजता से चिकित्सा सुलभ हो सके। बाबाश्री का यह स्वप्न हम सबके परस्पर सहयोग तथा पूर्ण समर्पण से पूरा हो सकेगा। हम सभी भक्त गण 'बाबा परिवार' के सदस्य के रूप में जाने जाते हैं। परिवार में एक दूसरे के विचारों के प्रति आदर भाव तथा सार्थक सम्भाषण होना चाहिए। सबमें सामंजस्य का होना नितान्त आवश्यक है। उसके बिना परिवार के उन्नयन का मार्ग प्रशस्त नहीं हो पाता।

हम अपने आराध्य से हमेशा निज परिवार की बेल बढ़ने, उसके फलने-फूलने की प्रार्थना किया करते हैं। 'बाबा परिवार' की बेल तभी बढ़ेगी जब हम 'स्व' की संकीर्ण सीमाएँ तोड़कर परहित के व्यापक धरातल पर आयेंगे, लोगों से सम्पर्क बढ़ायेंगे, बाबाश्री की वाणी को जनमानस तक पहुँचायेंगे और जन भावना का सम्मान करेंगे।

हाल के कुछ वर्षों से बाबा-परिवार की युवा पीढ़ी कुछ रचनात्मक कार्य करने को अति उत्साहित है। यह एक सुखद अनुभूति का विषय है। परिवर्तन सृष्टि का अनिवार्य नियम है और विकास का मूल भी। वृक्ष के पुराने पत्ते जब झड़ जाते हैं तो उनमें नव किसलय पल्लवित होते हैं। पूरी सृष्टि में नवजीवन का संचार हो जाता है। इसी तरह हमें बाबा-परिवार के नवांकुरों को विकसित होने का अवसर देना होगा, तभी नई चेतना, नई ऊर्जा का प्रसार होगा।

हमारी प्रौढ़ पीढ़ी ने बाबाश्री द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण कर अनेक सत्कार्य किये हैं। अब कर्त्तव्य यह बनता है कि वे अपने अनुभवों की स्नेहिल छाया से नई पीढ़ी को इतना परिपक्व बनाये कि वह बाबाश्री के विराट् लक्ष्यों की पूर्ति कर सके और उनके महती सपनों की साकार कर सके।

बाबाश्री से मेरी प्रार्थना है कि वे अपने आशीर्वाद से हम सबके कर्त्तव्य बोध को इतना प्रखर बनायें कि उनके उपदेशों का प्रचार और इस परिवार का प्रसार व्यापक रूप से हो सके ताकि पूरा विश्व उसमें समाहित हो जाए।

सम्पर्क सूत्र : फोन (०३३) २३५८ ४०१७

लाल रूमाल तेरी जादू से भरी

—बजरंगलाल जी गोयनका

यह घटना आज से करीब ४० साल पुरानी है। सापटग्राम में ईश्वर लाल अग्रवाल नाम के एक व्यक्ति बहुत बीमार पड़ गये, उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। उस व्यक्ति की स्थिति देखकर मेरे दादा जी श्री कामाख्यालाल जी गोयनका ने कहा कि इनका कोई इलाज सही नहीं बैठ रहा है, आप सब 'श्री पागलबाबा' की शरण में जाईये एवं उनसे प्रार्थना कीजिए। वे 'श्री पागलबाबा' के चरणों में जाकर प्रार्थना किये, दूसरे दिन सुबह 'बाबाश्री' उनके घर पर आये। पागलबाबा ने अपनी लाल रूमाल उस व्यक्ति के सर पर तीन बार घुमाई, उसके बाद बाबाश्री तुरन्त बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। सब लोग बाबा

को उठाने लगे, तब चिरंजीलाल जी ने कहा बाबा को कोई आदमी हाथ ना लगाये। करीब आधा घंटे बाद बाबा को होश आया, बाबा ने कामाख्यालाल जी गोयनका को एक तुलसी का पौधा दिया और कहा इसे आप अपने घर में जतन से लगा दीजिये। इसकी सेवा कीजिये, जैसे-जैसे यह तुलसी का पौधा मरेगा, यह व्यक्ति स्वस्थ हो जायेगा। धीरे-धीरे १० दिन के अन्दर तुलसी का पौधा मर गया और ईश्वरलाल जी पूर्णतया स्वस्थ हो गये। उसकी पत्नी को बाबाश्री ने कहा तुम्हारा स्वामी लम्बी उम्र तक जीयेगा। उस दिन के बाद में कामाख्यालाल जी गोयनका के घर तुलसी का पौधा ५-१० दिन से ज्यादा ठहरता ही नहीं, मर जाता है। उसके बाद कामाख्यलाल जी बाबाश्री के पास जाकर अपने घर में तुलसी नहीं ठहरती इसका सारा वृतान्त बताया। बाबाश्री ने उपाय पताया कि कोई तुम्हारे घर में बाहर का व्यक्ति तुलसी का पौधा लगायेगा तो वह फलेगा। उसके बाद हमारे घर तुलसी का पौधा होने लगा।

'बोलिये लाल रूमाल वाले धणी की जय

सम्पर्क सूत्र : फोन ०९८६४१ ८०१८०

सर्वव्यापी लीलानन्द ठाकुर

—राजकुमार चौधरी

सन् १९७५ का बात है। मैंने अपनी पत्नी को किसी बात पर क्रोध में थप्पड़ मार दिया था। उसके ६ महीने बाद मैं वृन्दावन गया। उस बात को भूल गया। बाबाश्री को प्रणाम करने

लगा तो मुझे दुत्कार दिया और चरण छूने से मना कर दिया। एक डेढ़ घन्टे बीत गये, फिर मैं चरण छूने गया तो बाबाश्री ने मना कर दिया। मेरे मन में दुःख हुआ कि ऐसी क्या भूल हो गई जिस कारण बाबा चरणों को हाथ लगाने नहीं दे रहे हैं? मैं बाबा के सामने बैठा रहा। भोजन का समय हो गया। आश्रम माँ दो बार आई भोजन करने को कहा। भोजन का समय हो गया, तुम भोजन क्यों नहीं कर रहे हो? मैंने कुछ जबाब नहीं दिया। बाबा देख रहे हैं और सुन रहे हैं। मेरी आँखों में आँसू आ गये कि ऐसी क्या गलती हो गई जो बाबा मुझसे नाराज है। मैं बाबा के सामने बैठा रहा। एक घंटे बाद मैंने बाबा से कहा आज गौहाटी से आया हूँ मेरी क्या गलती है मुझे बताईये। बाबाश्री मुझे भैया, मेरी पत्नी को भाभी कहते थे। तब बाबाजी ने मुझे कहा कि मैं तुमसे नाराज हूँ तुमने ६ महीने पहले मेरी भाभी को थप्पड़ मारा था, मैं उस समय कमरे में उपस्थित था। मैं तो ६ महीने पहले थप्पड़ वाली बात भूल ही चुका था। जब बाबाश्री ने बताया तो मैं सोचने लगा, बाबाश्री तो वृन्दावन में थे, और मैं गौहाटी में तो कैसे पता चला? तब बाबाश्री ने कहा मैं सब जगह हूँ सब जगह जा सकता हूँ। तब मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ। मैं बाबाश्री के चरणों में गिर गया और कहा कि अब ऐसी गलती फिर नहीं होगी मुझे क्षमा करें। बाबाश्री अन्तर्यामी है।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

सम्पर्क सूत्र : फोन ०९४३५५५३०५१

सत्य किन्तु अविश्वसनीय

—बजरंगलाल जी गोयनका

आज से करीब १०-१२ साल पहले सापटग्राम में विचित्र बाबा की लीला घटित हुई। मैं अपने परिवार के साथ शिवरात्रि महोत्सव में सापटग्रम आश्रम गया हुआ था। गौहाटी के राजकुमार जी चौधरी एवं उनकी धर्मपत्नी भी गये हुये थे। वहाँ आश्रम में मैंने बाबा के पुराने शिष्य स्वर्गीय शशीपगला एवं स्वर्गीय श्री सुरेश डाक्टर जी से सापटग्राम में महामाया मन्दिर के दर्शन करने का अनुरोध किया। मेरी ट्रक रिपेयरिंग होकर आई ही थी हम सब जाने के लिए तैयार हो गये, जिनकी संख्या करीब २० से अधिक ही थी। गाड़ी में 'बाबाश्री' की एक फोटो और झंडा लगाया, काफी दूर होने के कारण गाड़ी में गद्दे लगवा दिये। मार्च का महीना था, धूप खिली हुई थी, परन्तु राजू चौधरी जी ने कहा कि बच्चों का साथ है, इसलिए ५-६ लाल कम्बल साथ ले ले, हवा वगैरह हो तो काम आयेगी। हम सब ट्रक में बैठकर बाबाश्री का नाम लेकर भजन करते हुए महामाया के दर्शन करने हेतु चल पड़े।

गाड़ी ३-४ किलोमीटर ही चली कि अचानक जोर से बारिश होने लगी। हम सब चिन्ता में पड़ गये कि सब भीग जायेंगे। तब राजू चौधरी जी ने कहा कि सब कोई 'बाबाश्री' की ध्वनि लगाओ और यह लाल कम्बल ऊपर से पकड़ कर लहराओ और चारों तरफ से पकड़कर रखो। वास्तव में बाबा ने

लाल कम्बल को गिरीराज बना दिया, हम सब तो ध्वनि में ही पागल थे। सड़क पर ३-४ इंच पानी हो गया, परन्तु चमत्कार हुआ कि हमारी कम्बल नहीं 'भीगी'। हमलोग बड़े आनन्द से महामाया मंदिर पहुँचकर दर्शन किए।

जय हो सापटग्राम धणी की। आपको कोटि-कोटि नमन।

सम्पर्क सूत्र : फोन ०९८६४१ ८०१८०

बाबाश्री के भोग की अनोखी चाय (१)

—रीटा अगरवाल

लोगों के माध्यम से पागलबाबा के सम्बन्ध में कई चमत्कार सुन चुकी थी। अविश्वास तो नहीं करती थी, पर थोड़ा सा आश्चर्य में जरूर पड़ जाती थी। सितम्बर-अक्टूबर २००८ में मेरे साथ कुछ ऐसी घटना घटी कि मेरा विश्वास पागलबाबा के प्रति अटल हो गया और सारे चमत्कार सही लगने लगे। मैं जनवरी २००८ से लगातार बीमार रह रही थी। कमजोरी के कारण ठीक से खड़ी भी नहीं रह पाती थी। डाक्टरों को दिखाती पर कोई दवा असर नहीं करती। रिश्तेदार, मित्र या दूसरे जो करने कहते, मैं सहर्ष उसे करती पर स्वास्थ्य पर असर नहीं दिखाई देता था। मैं निराश हो चुकी थी। कहने के लिए तो सभी मुझे सांत्वना देते पर सभी को यही लगता था कि मैं शायद बच नहीं पाऊँगी। मेरे मन में भी बुरे ख्याल आते थे। मेरे बाद मेरे पति बच्चों का क्या होगा? यही सोचकर रो पड़ती थी। एक दिन मेरी तबियत बहुत ज्यादा खराब हो गई। उसी दिन राजकुमार

चौधरीजी से मेरे पति की बात हुई। बातचीत के दौरान उन्होंने मेरी तबियत के बारे में उन्हें बताया। उन्होंने कहा कि चिन्ता न करे बाबा सब ठीक करेंगे। उसी दिन राजकुमार चौधरीजी अपनी पत्नी के साथ मेरे घर आये, और मेरे सिर पर बाबाश्री का लाल रूमाल रखा। रूमाल रखते ही मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और निराशा न जाने कहाँ गायब हो गई। फिर उन्होंने बाबाश्री के चाय का भोग लगाकर मुझे पीने के लिए कहा। चाय पीते ही मेरा आत्मबल जग गया और मेरी बीमारी उसी दिन जैसे छू मंतर हो गई। मैं खुद को सहज अनुभव करने लगी और कुछ देर बाद मैं सामान्य लगने लगी। मुझे पूरा विश्वास है कि यह बाबाश्री की असीम कृपा है जो मैं ठीक हो गयी। आज मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ।

सम्पर्क सूत्र : फोन ०९४३५०४८३१६

बाबाश्री के भोग की अनोखी चाय (२)

—सत्यभामा चौधरी

सन् २००८ की बात है। मैं सीढ़ी से उतर रही थी मेरा पैर मुड़ गया। धीरे-धीरे मेरे पैर में दर्द होने लगा पर मैंने ध्यान नहीं दिया। मैंने सोचा पैर में दर्द तो है पर ठीक हो जायेगा। कई बार डाक्टर को दिखाना चाहा पर नहीं दिखाया। दर्द बढ़ते ही गया उठते बैठते चलने फिरने में भी तकलीफ होती थी। ७-८ महीने ऐसे ही चलता रहा। मैं मन ही मन बाबाश्री को याद करती और कहती दर्द ऐसे ही रहा तो मैं चल पाऊँगी या नहीं। बाबाश्री आप

ही कुछ करो आपकी भाभी के पैर का दर्द ठीक हो जाये। बाबाश्री का तृतीय वार्षिक उत्सव गौहाटी में था। उसी काम से मेरे पति कलकत्ता गये थे। मैं सुबह सोकर उठी तो आंगन में जैसे कोई मुझे बोल रहा है बाबाश्री के चाय का भोग लगाकर चाय पी लो तेरे पैर का दर्द ठीक हो जायेगा। यह एहसास होते ही मैंने तुरंत चाय बनाई, बाबाश्री के भोग लगाया। चाय पीते ही मेरे पैर का दर्द ठीक हो गया। बाबाश्री ने मेरी सुन ली। ये दयालू हैं, जो भी सच्चे मन से पुकारे ये कृपा करते हैं।

सम्पर्क सूत्र : फोन ०३६१२५४०३६२

स्कूली बच्चों तक मंजन एवं ब्रश पहुँचा

—संदीप मिश्रा, प्रधानाचार्य,
श्री लीलानन्द (पागलबाबा) विद्यापीठ

मैं बाबा के भक्तों से सुनता था कि बाबा भक्तों पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखते हैं, परन्तु मैं जब से जसीडीह में आया हूँ, मैंने बाबाश्री की प्रत्यक्षता का आभास किया है। ७ मार्च २००६ को बाबाश्री के एक भक्त दम्पत्ति बाबा आश्रम में ठहरे थे। विद्यापीठ में आकर बच्चों से मिलकर उन्हें बहुत अच्छा लगा। वे लोग बच्चों को कुछ देना चाहते थे। मैंने कहा बच्चों के पास पढ़ाई की हर सामग्री तो मौजूद है। अगर कुछ देना ही चाहते हैं तो बच्चों को ब्रश एवं मंजन दे दें। उन्होंने अगले दिन ८ मार्च को बच्चों को ब्रश एवं मंजन देने की बात कही। ८ मार्च को बच्चे बहुत उत्साहित थे, क्योंकि पहली बार वो ब्रश मंजन का प्रयोग करते। दिन भर बच्चे शिक्षक से पूछते रहे, कब

मिलेगा ब्रश मंजन। किसी कारणवश ब्रश मंजन आ नहीं पाया। छुट्टी होने का समय हो रहा था। बच्चों का उत्साह देखकर बच्चों को मंजन नहीं आ पाने की सूचना देने की हिम्मत मैं नहीं जुटा पा रहा था। मेरी समझ में नहीं आ रहा था-क्या करें। उसी समय विद्यापीठ के गेट के सामने एक गाड़ी आकर रूकी एवं आकर बच्चों को ब्रश मंजन दे गई। पूछने पर बताया की मैं कम्पनी की तरफ से आया हूँ जबकि ३ वर्ष हो गये विद्यापीठ के प्रारम्भ हुए परन्तु इससे पहले कम्पनी की गाड़ी न तो कभी आई थी और ना आज तक आई है।

बाबाश्री ने झंडोतोलन करवाया

—संदीप मिश्रा, प्रधानाचार्य,
श्री लीलानन्द (पागलबाबा) विद्यापीठ

जब मैंने जसीडीह आश्रम में रहना प्रारम्भ किया तो बाबाश्री के भक्तों से जब अपनी आप बीती सुनता था तो सुनकर बड़ा आश्चर्य होता था। परन्तु यहाँ रहने के बाद लगा कि बाबा की सच्चे मन से सेवा करने पर बाबा असंभव को भी संभव कर देते हैं।

विद्यापीठ के मैदान को ठीक करने का काम चल रहा था। ट्रैक्टर से मिट्टी गिरने की बात थी परन्तु मिट्टी नहीं गिर रही थी। यह घटना १५ अगस्त, २००८ की है। कलकत्ता से बहुत से लोग विद्यापीठ से झंडोतोलन पर आने वाले थे। मैदान की

हालत ऐसी थी कि झंडा फहराना सम्भव न था। मैं घबराकर बाबाश्री के कमरे में बैठ गया। यह १३ अगस्त २००८ की बात है, मेरी आँखों में आँसू थे। मैंने बाबा से कहा कि 'आपका काम तो मैं पूरी श्रद्धा से करता हूँ, फिर ऐसा क्यों? जब लोग झंडोतोलन के लिए आयेंगे, मैदान की ये हालत देख कर मुझे क्या कहेंगे'? इतने में मेरे मोबाईल पर फोन आया। किसी अनजान व्यक्ति ने मुझसे कहा मास्टर जी आपको मिट्टी गिरवाना है। मैंने हामी भरी। दूसरे दिन मिट्टी गिरना प्रारम्भ हो गया। तीन ट्रैक्टर से लगातार मिट्टी गिराकर मजदूरों ने २४ घंटों के अन्दर मैदान को तैयार कर दिया। ट्रैक्टर वाले से पूछने पर पता चला कि किसी व्यक्ति ने कहा कि मास्टरजी को मिट्टी गिरवाना है तथा फोन नम्बर भी दिया। इतना ही नहीं काम में व्यवधान न हो, इसलिए देवघर के आसपास की जगहों पर लगातार तीन चार घंटे तक मूसलाधार बारिश हो रही थी परन्तु आश्रम के आसपास एक बूंद बारिश नहीं हुई।

सम्पर्क सूत्र : फोन ०९९३४१२२५२६

११००० बोल्ट से बाबाश्री ने बचाया

—डॉ० अनिल कृष्ण पाण्डेय

१२ फरवरी, २००९ दिन बृहस्पतिवार को हम भुलाना चाहें तो भी नहीं भुला सकते। घटना इस प्रकार है कि श्री लीलानंद पागलबाबा विद्यापीठ के निर्माण का कार्य चल रहा था। मजदूरों को मजदूरी हेतु देने के लिए उस दिन पैसा नहीं था।

तभी लगभग संध्या चार बजे आरोग्य भवन के एक अतिथि गौशाला में गायों को गुड़ खिलाने हेतु आये। मैं और विद्यापीठ के प्रिंसिपल श्री संदीप मिश्रा ने आश्रम में चल रहे गतिविधियों की जानकारी उन्हें दी। हमारी सारी बातें सुनकर उन्होंने कहा कि मैं आरोग्य भवन में ठहरा हूँ, आप आज ही आकर विद्यापीठ के लिए सहयोग राशि ले जायें।

रात्रि के सात बजे मैं और श्री संदीप मिश्रा आरोग्य भवन गये तथा उनसे मुलाकात कर सहयोग राशि प्राप्त कर लिये। रिक्शे पर वापसी करते समय मिश्राजी ने कहा आज मजदूरों को देने हेतु पास में पैसा नहीं था किन्तु बाबाश्री का कार्य न रूके इसके लिए बाबाश्री ने जुगाड़ कर दिया। मानव स्वभाव के वशीभूत हो अचानक मेरे मुँह से निकला बाबाश्री तो अपना जुगाड़ कर लेते हैं किन्तु हमलोगों का जुगाड़ कब करेंगे? इतना कहना ही था कि ठीक साधना आश्रम के सामने वाले ट्रांसफार्मर से ग्यारह हजार बोल्ट से प्रवाहित विद्युत का तार टूट कर रिक्शे के चारों तरफ से लिपटता हुआ गिर गया। रिक्शा चालक दूर जा गिरा तथा मैं और मिश्राजी किसी तरह विद्युत प्रवाहित तार से बचते हुए रिक्शा से नीचे उतरे। चारों तरफ लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई। रिक्शा चालक भी उठकर खड़ा हो गया। हमलोगों का दिल जोरों से धड़कने लगा तथा वाणी स्तब्ध हो गई। ऐसा लग रहा था कि मानों बाबाश्री ने चेतावनी दी है कि फिर कभी मेरे ऊपर शंका न करना।

सम्पर्क सूत्र : फोन ०९३३४८७६९३२

अलौकिक शक्ति

—डॉ० विश्वजीत चन्द्रा

कभी-कभी जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ घट जाती है जिस पर खुद को भी विश्वास नहीं होता तो दुनिया को समझना तो बहुत ही कठिन कार्य है।

इस वैज्ञानिक युग में मेरे साथ एक ऐसी ही घटना का सामना दिनांक २५.१२.२००९ हुआ है जिसने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया है। जसीडीह में पागलबाबा आश्रम के माध्यम से गरीब बच्चों को मुफ्त शिक्षा दी जाती है। जिसमें मेरे सर डॉ० शिबेन सिन्हा ने एक लाख रूपया दान दिया। उन रूपयों को मैंने अपने हाथों से गिनकर आश्रम में ले जाने के लिए रख दिया। उसके बाद में जसीडीह आश्रम चला गया। लौटते वक्त जब मैं बाबा के आगे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहा था तो मुझे ऐसा आभास हुआ कि बाबा कह रहे हैं कि उस रूपये में से जो ज्यादा है उसे अपने सर को लौटा दो। कलकत्ते आकर मैंने जब रूपयों को खोलकर देखा तो उन सभी रूपयों में एक गड्डी सौ के बदले ५०० रूपये की थी यानि चालीस हजार रूपये अधिक थे। जब उसे लेकर मैं अपने सर के पास गया तो सर ने उन रूपयों को लेने से इन्कार कर दिया क्योंकि उस रूपये में जो लोहे की पिन लगी थी वो आजकल नहीं लगती है। अतः वह रूपया सभी रूपयों से अलग था। सर ने कहा कि उन रूपयों को भी बच्चों की पढ़ाई में ही लगा दिया जाये। इस तरह यह

घटना भगवान में आस्था ही रखने वाले लोगों के लिये संकेत है कि आज भी इस दुनिया में एक तीसरी सत्ता है जो सदा हमारे साथ रहकर हमारे कर्मों को देखते हुए हमारे भाग्य का फैसला करती है और उसी के अनुसार हमारी सहायता करती है।

सम्पर्क सूत्र : फोन ०९८३०१ ६४४९५

हरि कथा अनन्ता

—राजकुमार चौधरी

सन् १९७१ की बात है, मैं पहली बार 'रास उत्सव' में बड़झाड़ आश्रम गया। मैं वहाँ 'बाबाश्री' की सेवा में था। एक दिन 'बाबाश्री' ने कहा भण्डारा के लिए आठ मन बेसन का बुंदिया बनवाना है, सो तुम गौहाटी से हलवाई लेकर आओ। मैं गौहाटी आया और गौहाटी में उस वक्त प्रसिद्ध हलवाई श्री बैजनाथ जी शर्मा एवं श्री धीरज जी शर्मा से बात की और उन्हें बताया कि हमें आठ मन बेसन का बुंदिया बड़झाड़ आश्रम में भण्डारे के लिये बनवाना है, तब उन्होंने बड़े अभिमान पूर्वक कहा कि ये तो आठ मन बेसन का बुंदिया है, हम तो साठ मन का बुंदिया बना देंगे। ये आठ मन बेसन का बुंदिया तो चार भट्टी पर १०-१२ घंटे में बना देंगे।

मैं उन लोगों को लेकर बड़झाड़ आश्रम गया। वे सुबह ५ बजे से चार भट्टी पर बुंदिया बनाने लगे। दूसरे दिन की सुबह के पांच बज रहे थे कि वो मुझे खोजते हुए धर्मशाला में आये, मैं उस समय सो रहा था, उन्होंने मुझे उठाया और कहा कि आप

हमें आठ मन बेसन दिये या ज्यादा बेसन दिये थे, क्योंकि न तो बेसन खत्म हो रहा है और न ही घी खत्म हो रहा है। कहीं आपने हमें सामान ज्यादा तो नहीं दे दिया? मैं थोड़ा घबरा सा गया और उन्हें साथ लेकर 'बाबाश्री' के चरणों में गया और कहा कि बाबाश्री हलवाई कह रहे हैं कि आपने सामान ज्यादा तो नहीं दिया, अभी तक बेसन, घी, चीनी समाप्त ही नहीं हो रहा है, तब बाबाश्री ने हँसकर कहा कि ये तो कह रहे थे कि हम साठ मन का बना देंगे। तत्पश्चात् 'बाबाश्री' उठकर भट्टी के पास गये और बोले कि कहाँ ज्यादा है, बस भण्डारा चलने तक का ही सामान है और एक घंटे के अन्दर ही कार्य सम्पन्न हो जायेगा।

सम्पर्क सूत्र : फोन - (०३६१) २५२०६३१

त्वरित कृपा

—सत्य कुमार टिबड़ेवाल

आज से लगभग ८ वर्ष पूर्व की बात है बाबा श्री के वृन्दावन स्थित लीलाधाम आश्रम में उत्सव के दौरान वहाँ उपस्थित हम सभी भक्तों ने मिलकर पूरे नौ मंजिल मंदीर मे कार सेवा (मंदिर की सफाई) का निर्णय लिया एवं तत्काल कार्य का शुभारम्भ कर दिया गया।

कार सेवा करते हुये जब हम श्री राधागोविन्द मंदिर स्थित तीसरी मंजिल पर पहुँत कर कार सेवा कर रहे थे तब फर्श गीला होने से अचानक पूरी तीव्र गति से सामने की ओर मेरे पैर फिसल गये एवं अगले ही पल में धड़ाम से मार्बल फर्श पर गिर

पड़ा, झटके से गिरने से मेरा सर काफी तेजी से फर्श से टकराया एवं इसकी आवाज काफी जोर से हुई एवं आवाज सुनकर सभी मौजूद साथी भक्त तत्काल स्थिति एवं संभावित बड़ी चोट होने के डर से चिंतित हो रहे थे एवं मैं भी इस तरह अचानक गिरने से पूरी तरह घबराया हुआ था।

परन्तु अचानक उसी पल बाबाजी की ऐसी कृपा हुई की अदृश्य शक्ति से बिना विशेष प्रयास किये मैं न सिर्फ उठ खड़ा हुआ बल्कि मुझे किसी प्रकार की चोट भी नहीं आई एवं किसी प्रकार की तकलीफ या दर्द तक का एहसास नहीं हुआ एवं ऐसा लगा जैसे कुछ हुआ ही न हो एवं बाबा श्री की कृपा से पुनः साथी भक्तों के साथ कार सेवा में लग गया।

अतीत की इस अविस्मरणीय घटना का चित्रण जब भी वर्तमान में मेरे मानस पटल पर अंकित होता है तो अनायास ही दिल एवं दिमाग में एक ही बात उठती है उस दिन बाबा श्री ने जीवन दान नहीं दिया होता तो क्या होता।

बाबा श्री के श्री चरणों के कोटी-कोटी प्रणाम।

सर्वव्यापी गुरुवर

—सत्य कुमार टिबड़ेवाल

आज से लगभग ५ वर्ष पूर्व जनवरी माह के शीतकाल में लघुशंका के लिये मैं शौचालय गया एवं अचानक अचेतावस्था में आकर शौचालय में ही गिर पड़ा, अचेतावस्था के कारण इस स्थिति में कितनी देर रहा उसका भी अनुमान नहीं लगा सका,

स्वत: ही जब मेरी अचेत अवस्था दूर हुई मैनें अपने आपको शौचलय के फर्श पर पड़ा पाया एवं तुरंत उठकर अपने आपको संभाला एवं स्थिति की गंभीरता एवं मौसम की ठंड को देखते हुये मैं चुपचाप बिना किसी से कुछ कहे रजाई ओढ़कर सो गया।

प्रात: जब मेरी नींद खुली तो मेरा पुरा शरीर अकड़ा हुआ था एवं अपने आपको हिला डुला भी नहीं सका, परिस्थिति को देखते हुये तुरंत डाक्टर को बुलवाया गया एवं उन्होनें पूरी जांच के बाद रात्रि की घटना को ही कारण बताया एवं उन्होनें शौचालय में पाया कि प्लास्टिक की बाल्टी के दो टूकड़े होकर गिरे हुए हैं। मानो डाक्टर ने अनुमान लगा लिया कि रात्रि में अचेत अवस्था में आने के बाद मैं बाल्टी पर गिरा हूँ जब की इसका किसी भी प्रकार का संकेत मुझे याद नहीं था,

सारी जांच के बाद स्वयं डाक्टर साहब ने कहा मैं भी आश्चर्यचकित हूँ कि आप मध्यरात्रि में अचेत अवस्था में चले आये एवं मजबूत बाल्टी पर गिरे, बाल्टी टूट गई परन्तु आपको फेक्चर तो दूर की बात खरोच तक नहीं आई एवं आप अपने आप कुछ समय बाद उठकर कमरे में सोने चले गये, वास्तव में डाक्टर के लिए भी यह घटना किसी चमत्कार से कम नहीं थी, सुबह आने के बाद केवल शरीर अकड़ गया था वो भी दिन में बिल्कुल ठीक हो गया।

यह सब बाबाश्री की कृपा से संभव हो सकता है एवं जब भी यह घटना याद आती है रोम रोम बाबाश्री का आभार प्रकट करता है, किस प्रकार बाबाश्री दिन हो या रात कदम-कदम पर

विपत्ति में हमारी रक्षा करते हैं।

बाबा श्री के चरणों में वन्दन।

मातृ देवो भव :

—सत्य कुमार टिबड़ेवाल

मेरी माताजी श्रीमती शान्ति देवी बाबाश्री की कृपा से वर्तमान में ९८ वर्ष की आयु में अपने दैनीक कार्य, सत्संग एवं गुरु पुजा पूरी तन्मयता से स्वयं करती है, माताजी बाबाश्री की अनन्य भक्त है एवं स्वयं बाबाश्री से दीक्षा लेने का उन्हे सौभाग्य प्राप्त है।

विगत ४-५ वर्षो से उम्र के इस पड़ाव में माताजी के साथ कम से कम ८-१० बार गिरने की घटना घट चूकी है, एवं इस दौरान कई बार उन्हें गंभीर चोटें भी आई है, जिसकी वजह से हड्डी का टूट जाना एवं स्टीच इत्यादी की शल्य चिकित्सा से भी गुजरना पड़ा है, परन्तु बाबाश्री की कृपा से एवं उनसे प्राप्त दीक्षा के आत्मीय बल से, प्रत्येक बार होने वाली दुर्घटना एवं जटिल शल्य प्रक्रिया के दौरान होने वाले कष्ट को परास्त करते हुए इलाज के बाद फिर से उन्हे नई उर्जा एवं स्फूर्ति से भर देता है। उनकी इस खुशी से पूरा परिवार उत्साहित एवं आध्यात्मिक उर्जा से ओत प्रोत है।

९८ वर्ष की इस उम्र में इतनी बार जटिल चोट एवं इलाज के कष्ट के बावजूद पूर्णतया ठीक होकर अपने दैनिक कार्य पूजा अर्चना सत्संग में तत्पर हो जाना गुरु कृपा से ही संभव हो पा

रहा है एवं माताजी का पूरे परिवार को आशीर्वाद मिल रहा है।

बाबा जी के चरणों में कोटी-कोटी प्रणाम।

जय बाबा की

—भगवती देवी रुँगटा, कोलकाता

जय बाबा की!

यह घटना लगभी १९६६ की है, जब जसीडीह आश्रम का निर्माण कार्य चल रहा था।

मैं अपने पीहर भागलपुर से जसीडीह गई थी। बाबाश्री एवम् आश्रम माँ वहा पर उपस्थित थे। शाम का वक्त था, करीब ५ बजे बाबाजी के चारों तरफ बाबाश्री के काफी भक्तजन बैठे थे।

उस समय बाबाजी ने मुझे ये आदेश दिया की सभी भक्त जो बाबा के समीप बैठे हैं, उन्हें चाय दी जाय।

एक छोटी केटली में थोड़ी सी चाय थी। केतली हिलाने से मुझे लगा की इसमें थोड़ी सी चाय ही है। मैनें यह सोचा, इतनी थोड़ी चाय में भला कैसे मैं सब को दूँगी। फिर भी बाबाजी का आदेश था।

मैनें सब को चाय देना शुरु किया, मिट्टी के छोटे भाड़ में थोडी सी दी गई, ये सोचकर कि चाय केतली में बहुत कम है।

वहाँ पर उपस्थित सभी भक्तों को चाय देने के बाद, केतली में चाय उसी तरह बची हुई थी और हिलाने पर वैसे ही आवाज कर रही थी जैसे शुरु में आवाज आ रही थी।

ये बाबाजी की लीला आज भी मेरे लिए एक आश्चर्य की बात है। ये बाबाश्री की ही महिमा है।

सम्पर्क सूत्र : (०३३) २३९६८१७५,
९१२३६ ४८६७०

गुरुकृपा हि केवलम्

—किशोर कुमार तोषणीवाल

जुन २०१७ की घटना है, वृन्दावन लीलाधाम पागल बाबा आश्रम के मुख्य द्वार के उपर की २ मंजीले काफी जर्जर स्थिति में आ चुकी थी। अत: सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि उपर की २ मंजिलों को हटा दिया जावे ताकि किसी भी प्रकार की होने वाली संभावित दुर्घटना से बचा जा सके अत: उपर की मंजिलों को तोड़ने का कार्य जून २०१७ में आरम्भ कर दिया गया ताकि गुरुपूर्णिमा तक कार्य को सम्पन्न कर लिया जा सकें।

मुख्य गेट मेन रोड के बिल्कुल पास होने से एवं दुकानों से जुड़े होने के कारण काफी जोखीम भरा कार्य था अत: निर्णय लिया गया कि आवश्यकता अनुसार लेड लाईटें एवं मशीनों की व्यवस्था करके रात्रि में तोड़ने का कार्य किया जावे एवं सुबह दूकाने खुलने से पहले ८.०० बजे तक तोड़े गये मलवे को उपर की मंजिल से ट्रैक्टर ट्राली में गिराकर हटवा दिया जाये एवं उसी क्रम में निरंतर कार्य चल रहा था एवं कार्य तीव्र गति से चल रहा था।

उपरोक्त चल रहे कार्य के दौरान रात्रि में कार्य करते करते

एक मजदूर शायद अस्वस्य हो चुका होगा, एवं प्रात: ५.०० बजे के लगभग उपर की मंजिल से लोहे के बड़े पात्र में मलवा भरकर सर पर रखकर नीचे ट्रैक्टर में गिरा रहा था एवं अचानक उसने अपना नियंत्रण खो दिया एवं उपर की मंजिल से सर पर रखे मलवे के साथ नीचे ट्रैक्ट्रर पर पड़े मलवे पर धड़ाम से गिर पड़ा एवं गिरने की जोर से आवाज हुई एवं साथी सदस्यों ने संभावित बड़ी दुर्घटना को भांपते हुये जोर से शोर मचाया एवं काफी भीड़ एकत्रित हो गई।

इसी बीच बाबाश्री की ऐसी कृपा हुई की अगले ही पल वो मजदूर सही सलामत खड़ा होकर अपने कपड़े झाड़ रहा था जैसे गिरते हुए बाबाश्री ने अपनी गोद में उठा लिया हो एवं उसे किंचित मात्र भी चोट नहीं आई जो की आश्चर्यजनक घटना थी। ३० फूट उपर से मलवे के साथ नीचे ट्रैक्टर में पड़े मलवे एवं नुकीले पत्थर पर औधें मूँह गिरकर एक खरोंच भी नहीं आना यह बाबाश्री की कृपा के बिना असम्भव था।

स्थिति की नजाकत एवं मजदूर की पूर्ण रुप से सलामती देखकर सबने बाबाश्री का जयघोष किया एवं बिजली की तरह खबर फैल गई कि यहाँ बाबा साक्षात् मौजुद है एवं हर वक्त हम सभी भक्तों पर कृपा बरसा रहे हैं।

बाबाश्री के चरणों में बारम्बार प्रणाम!

१०८बी, नारकेल डांगा मोड़, कोलकाता-५४,
९३३९८८६४४६

तस्मै श्री गुरुवे नमः

—किशोर कुमार तोषणीवाल

सन् १९७७ के आस पास की बात है, मेरी बड़ी बहन ससुराल (विराटनगर, नेपाल) से कलकत्ता मिलने आई हुई थी, ससुराल के परिवार में शादी होनेवाली थी उसकी खरीद्दारी भी करनी थी। शादी की खरीददारी के कारण समान काफी हो चूका था। उनकी, तत्कालिन चलने वाले बेड़ींग, ट्रंक इत्यादि पैक किये जा रहे थे। एवं दीदी तथा सामान को लेने जीजाजी कलकता आने वाले थे। परन्तु अचानक उनके परिवार में नजदीकी रिश्तेदार का देहांत हो गया। अतः जीजाजी के आने का कार्यक्रम संभव नहीं हो पाया एवं सूचना मिली कि दीदी को भी तत्काल रवाना करना है। परिस्थिति को देखते हुए दीदी के साथ मेरा जाना तय हुआ। मेरी उम्र लगभग १६ वर्ष की थी एवं नेपाल जाने का कौतुहल भी था एवं मैं निश्चित था दीदी साथ में है मुझे कोई चिन्ता नहीं।

निश्चित समय पर रवाना होने के लिए टैक्सी आई एवं सामान की बहुतयात (शादी की खरीददारी) थी एवं हम दोनों भाई बहन की कम उम्र एवं नेपाल का लम्बा रास्ता एवं बार्डर पर चेकींग की होने वाली समस्या को दृष्टिगत रखते हुये माता जी का मन भर आया एवं नम आँखों से माता श्री ने बाबाश्री से प्रार्थना की कि बाबा आप साथ में रहकर बच्चों को पहुँचाना एवं हम ट्रेम में रवाना हो गये। अगले दिन सही समय पर नेपाल बार्डर (काकड़भीट्टा) पहुँच गये एवं वहाँ दीदी को नये समान की

चेकींग कि चिन्ता हो रही थी परन्तु बाबाश्री की ऐसी कृपा हुई चेक करने वाला खुद ही बोल रहा है आप लोगों को लक्ष्मण बाजार (विराटनगर) जाना है ना आप लोग तुरंत जाईये यह आज के लिए अंतिम बस है एवं सिर्फ २ ही टिकटें है, एवं हमें तत्काल बस के लिए रवाना कर दिया गया। आश्चर्य की बात थी जिसे समान चेक करना था वही हमारी आगे की तैयारी करवा रहा था एवं सही समय पर पूरे सामान के साथ दीदी के ससुराल पहुँच गये।

अगले दिन वापसी यात्रा में मेरे साथ जीजाजी के बड़े भाई की लड़की उम्र लगभग ८ वर्ष जो कलकत्ता में पढ़ती थी उसे २६, प्रसन्न कुमार टैगोर स्ट्रीट, नूतन बाजार पहुँचना था एवं समयानुसार हमलोग सकुशल कलकत्ता पहुँच कर बेबी को नूतन बाजार घर तक पहुँचाकर मैं अपने आप को काफी हल्का महसुस कर रहा था एवं नूतन बाजार से शोभाबाजार स्थित अपने घर जाना था। अतः सामने ही आने वाली ट्राम में बैठ गया, ट्राम में बैठते ही विपरीत दिशा से आने वाली ट्राम के पिछली बोगी में सिर्फ एवं सिर्फ बाबाश्री को पूरे तिलक छापा, चन्दन से सुसज्जित खिलखिलाते हुए चेहरे की छवि दिखी जो दिल एवं दिमाग में बैठ गई। कुछ ही पल में ट्राम अपनी विपरीत दिशा में आगे बढ़ चुकी थी परन्तु बाबा श्री का मुस्कुराता हुआ चेहरा बार-बार सामने आ रहा था। इसी बीच शोभाबाजार स्थित घर पहुँच गया, माताश्री बड़ी बैचेनी से इंतजार कर रही थी एवं पहला प्रश्न पुछा सब आराम से पहुँच गये थे तो, मेरी खुशी

एवं पूरी बात सुनकर माताश्री आश्वस्त हो गई।

अगले ही पल मैनें बाबाश्री के नयनाभिराम खिलखिलाती एवं हंसती हुई छवि के दर्शन की बात बतायी एवं बार बार उसकी चर्चा कर रहा था क्योंकि कुछ ही पलों के पहले की गटना थी एवं यह अविस्मरणीय अद्भूत बात थी। बाबाश्री वृन्दावन में एवं दर्शन कलकत्ते में सुबह ८ बजे वो भी ट्राम में, तब माताश्री ने समझाया देखो मैने बाबाश्री से अरदास की थी आप साथ में रहकर पहुंचाना एवं बाबाश्री ने कृपा की तुम्हारे साथ थे, परन्तु बालहठ या बचपना के कारण बात समझ में नहीं आ रही थी। इसी बीच अगले ही माह मां एवं पिताजी का वृंदावन जाने का प्रोग्राम तय हुआ एवं मुझे मालूम पड़ते ही मैने जिद कर ली मैं भी आपके साथ चलूँगा एवं बाबा श्री से पूछुंगा मैनें आपको कलकत्ता में कैसे देखा, एवं पिताजी ने मेरी जिद को देखते हुए अपनी समहति दे दी।

निर्धारित तिथि पर हम तीनों वृन्दावन पहुँच गये एवं बाबा श्री के बैठक में बाबा के साथ बैठ गये। भक्तों का आना जाना लगातार चल रहा था मैं इस इंतजार में बैठा था जब कोई ना रहे तब एकान्त में बाबाश्री से अपनी बात पूँछूँ एवं बाबाश्री अर्न्तयामी सब समझ चुके थे की मेरे आने का अभिप्राय क्या है एवं घंटो से क्यों बैठा हूँ। कुछ ही समय बाद लगभग ८.०० बजे के आस पास ऐसा समय आया जब बैठक में बाबाश्री एवं मैं दो ही थे एवं बिना समय गंवाये मैनें बाबाश्री से पूछा मैनें आपको कलकत्ता मे ट्राम में देखा था मेरे पूछते ही हूबहू वही

हंसी जोर जोर से खिलखिलाकर उसी स्वरुप का दर्शन करवाया जो छवि महिनों से अपने मानस पटल पर लेकर चल रहा था, एवं जितनी भी शंका दिमाग एवं दिल में थी एक ही पल में सारी शंका का समाधान हो गया। मेरा ठाकुर तो साक्षात् ब्रह्म है, भगवान है, सब जगह है। एवं बाबाश्री के चरणों में नत मस्तक हो गया एवं आज ४० वर्षों के बाद भी जब यह घटना याद आती है, तो रोम रोम बाबामय हो जाता है एवं गुरु कृपा का ऋणी हो जाता है कि किस तरह ठाकुर भक्तों के साथ रहकर कृपा बरसाते है।

१०८बी, नारकेल डांगा मोड़, कोलकाता-५४,
९३३९८८६४४६

अनोखा अनुभव

—चौथमल तोषणीवाल
५४१ए, रविन्द्र सरणी, कोलकाता-३

फरवरी २०१७ की बात है मेरा स्वास्थय फिछले १ साल से ठीक नहीं चल रहा था एवं घर में रहकर स्वास्थ्य लाभ कर रहा था। इसी बीच जसीडीह स्थित पागल बाबा आश्रम के स्वर्ण जयंती उत्सव में दिनांक १८ फरवरी को पहुँचकर उत्सव में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं आश्रम के मंदिरों में अभिषेक हेतु वृन्दावन से विद्वान पंडितों को बुलवाया गया था एवं उनके द्वारा अभिषेक के संकल्प एवं पूजन हेतु मुझे अवसर प्राप्त हुआ। शारीरिक दृष्टिकोण से स्वस्थ नहीं होते हुए भी पूरी

तन्मयता से पंडितों के निर्देशानुसार कर रहा था एवं कोई अदृश्य शक्ति मुझे कई घंटे तक चलने वाले पुजन में शक्ति प्रदान कर रही थी, इसी बीच बाबाश्री ने मेरा ध्यान ५० वर्ष पूर्व की घटना पर केन्द्रित करवाया जिसे मैं पूर्णतया भूल चुका था एवं ५० वर्ष पूर्व की उस घटना का चित्रांकन मेरे मस्तिष्क में घुमने लगा, इस घटना का विवरण इस प्रकार है।

ऐसा लगा बाबाश्री कह रहे हैं याद करो ५० वर्ष पूर्व वृन्दावन से मैं अपने साथ इस मन्दिर की स्थापना हेतु वृन्दावन से तुम्हें साथ लेकर आया था एवं यह बात स्मृति में आते ही पूर्व की पूरी घटना एक एक करके मुझे याद आने लगी, जो कि इस प्रकार है।

सन् १९६७ की बात है वृन्दावन स्थित आश्रम में मैं आम भक्तों के साथ बाबा श्री के साथ बैठा हुआ था, इसी दौरान बाबाश्री ने निर्देश दिया जसीडीह जेते होबे, तैयारी करो एवं बाबाश्री के आदेशानुसार सारी तैयारीया कर ली गई एवं बाबाश्री के साथ श्री मोहन लालजी टीबड़ेवाला, गोविन्दरामजी भिवानीवाला, बनवारी लालजी एवं मैं बाबाश्री के सानिध्य में ट्रेन द्वारा जसीडीह के लिए रवाना हो गये एवं जसीडीह पहुँचकर फतेहपुरीया निवास से संलग्न भूमि पर आश्रम की आधारशिला रखी गई एवं निर्माण हेतु धन राशि की चर्चा हुई तब श्री मोहनलालजी टीबड़ेवाल ने कहा सोने की व्यवस्था हो जायेगी परन्तु धनराशि आगरा में है। मेरे भाई साहब के पास वहाँ से लाना होगा। बाबाश्री ने मुझे आगरा जाने हेतु आदेश दिया। उस वक्त मोबाइल या फोन के साधन थे नहीं। परन्तु जब अगले ही

दिन मैं आगरा टीबड़ेवालजी के पास पहुँचा तो उनके पास रुपैये लेकर कन्या तैयार थी, जैसे बाबाश्री द्वारा उन्हें खबर मिल चुकी हो एवं रुपये लेकर मैं अगले दिन मैं जसीडीह पहुँच गया एवं कार्य का शुभारम्भ बाबाश्री के कर-कमलों द्वारा हुआ। आज के आंकलन से उस धनराशी का मूल्य लगभग ५० लाख होगा। यह बाबाश्री द्वारा रचित अद्भूत संयोग है। ५० वर्ष की पूर्व घटना जो स्मृति से धूमिल हो चुकी थी उसकी पुनरावृति करवाना एवं स्वर्ण जयन्ती अवसर पर शारिरिक अवस्थता के बावजूद ८३ वर्ष की उम्र में सपत्नी, पुत्र-पुत्रवधु, पौत्र-पौत्र वधु के साथ बुलाना मेरे लिए सुनहरे अवसर से कम नहीं था। पूरे परिवार को पुनः बाबाश्री का सानिध्य मिला। बाबाश्री के चरणों में कोटी कोटी नमन।

अनुभव

बसन्त कुमार फतेहपुरिया
९८३०१४६००६

सन् १९७९ में मैं अपने माता-पिता की अवस्थता के कारण बाबा श्री के आदेशानुसार बासन्ती पूजा पर गया था अर्थात पूजा मुझे ही करनी थी। पूजा के दौरान सप्तमी के दिन बाबा श्री चन्दन आदि से श्रृंगार करके दुर्गा माँ के मन्दिर में दर्शन हेतु आए। तब मैनें अनुभव किया कि बाबाश्री के चारों ओर एक चाँदीमय आभा भी साथ-साथ चल रही थी। सर्वप्रथम मैनें सोचा कि यह मेरा भ्रम है। किन्तु अष्टमी और नवमी के दिन

भी यही घटना हुई अर्थात बाबाश्री के चारों ओर वही आभा परिलक्षित हो रही थी। पुनः १९८० में भी पूजा के दौरान बाबाश्री चंदन का श्रृंगार करके दुर्गा माँ के मंदिर में दर्शन हेतु आए, फिर वही आभास मुझे हुआ। तब मैं आश्वस्त हो गया कि बाबाश्री महान् विभूति तो हैं ही, भगवान् का साक्षात् स्वरुप भी हैं।

३० मार्च २०१५ को हमें हठात् मालूम पड़ा कि मेरे दौहित्र को बहुत ही जटिल ब्लड कैंसर है, वह उस समय ११ महीने का था। हम सब बहुत ही दुखी थे। ३१ मार्च को उसे टाटा मेडिकल सेंटर कलकता में भरती किया गया। करीब डेढ़ महीने तक वह यहाँ अस्पताल में था। उसी दौरान एक दिन मेरे अनुज संत को स्वप्न आया कि मेरा पुत्र दौड़ता हुआ आया और कह रहा है कि बाबाश्री उस बच्चे के केबिन में गए हैं, तभी हमें यह समझ में आ गया कि बच्चा जरुर स्वस्थ हो जाएगा, उसे बाबा का आशीर्वाद प्राप्त हो गया है। उसके पश्चात् उस बच्चे को टाटा मेडिकल सेंटर में उचित व्यवस्था न होने के कारण चेन्नई अपोलो में भरती किया गया। वहाँ उसके पेट से स्पलिन निकाल दिया गया और उसका बोन मैरो ट्रांसप्लान्ट किया गया, जो एक जटिल शल्य चिकित्सा थी। मैं चेन्नई से आकर कलकत्ता में बाबा के साप्तहिक कीर्त्तन में गया। मैं बहुत ही दुखी था। भजन गाते गाते मेरी आँखों से अविरल अश्रुधारा बह रही थी, इतने में ही बाबा की तस्वीर से एक फूल आकर गिरा। बाबा का आशीर्वाद समझ कर वह बच्चे के सिरहाने रख दिया। वह बच्चा आज बाबा के आशीर्वाद से पूर्णतः स्वस्थ है। अपोलो अस्पताल के

डाक्टर भी उसे एक अभूतपूर्व चमत्कार ही मान रहे हैं। हम सब भी बाबा की कृपा से अभिभूत हैं। हम सबको ऐसे ही बाबा का आशीर्वाद सदैव प्राप्त होता रहे।

मम नमः गुरुदेवाय.....

पल पल तेरे साथ मैं रहता हूँ...

— अजय पोद्दार
९४३३० २१२०६

जय बाबा की!

२९ जुलाई, २०१३ की बात है। मैं और मेरी पत्नी कृष्णा महत्वपूर्ण शल्य चिकित्सा (कृष्णा की) के लिए ट्रेन से वेल्लोर जा रहे थे। ३० जुलाई को जब ट्रेन विशाखापट्नम स्टेशन पहुँची, तब मैं खाना लेने प्लेटफार्म पर उतरा। चूँकि विशाखापट्नम प्लेटफॉर्म काफी चौड़ा है इसलिए खाने की दुकानें थोड़ी दूरी पर है। मैं खाना लेने में व्यस्थ था कि कब ट्रेन चल कर ३०-४० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ ली पता ही नहीं चला।

जब तक मुझे पता चला तब तक काफी विलम्ब हो चुका था और चिंता ये थी कि ट्रेन में बीमार पत्नी अकेली थी।

मैं विवश था मैंने दौड़कर ट्रेन पकड़नी चाही, दोनों हाथ से ट्रेन का रॉड पकड़ भी लिया, पर अचानक एक हाथ छूट गया और मैं स्लिप करते करते ट्रेन से नीचे प्लेटफॉर्म पर गिर गया। अब तक एक हाथ से ट्रेन के रॉड पकड़े हुए पूरा शरीर प्लेटफार्म पर घसीटता जा रहा था। साधारणतः घसीटते हुए

प्लेटफॉर्म के नीचे मुझे पीस जाना था और मुझे मेरा अंत निकट ही दिख रहा था और मैंने बाबाश्री का स्मरण किया।

पर चमत्कारिक ढंग से मेरा पूरा शरीर प्लेटफॉर्म की तरफ ही घसीट रहा था। अचानक किसी ने ट्रेन की चैन खींची और एकाएक ट्रेन रुक गई। काफी खरोंच (जो कि कुछ भी नहीं) लेकर जैसे तैसे मैं अपनी बोगी तक पहुँचकर पत्नी की नजर बचाकर कम्बल ओढ़कर लेट गया, (पेंट की पॉकेट मे दो मोबाईल फोन पूर्णतः सुरक्षित थे) औ अश्रु धारा अनवरत बह रही थी, पर मन में विश्वास हुआ कि बाबाश्री ने पत्नी का संकट काट दिया है और उसकी जटिल शल्य चिकित्सा भी सफल हो गयी।

BABA - THE ULTIMATE SAVIOUR

Dr. Prabir Kr. Chatterjee
64/65, Block -B, Flat No - 7
Lake Town, Kolkata - 700089
M # 9831085368

In the year 1968, when I was 4 years old I came in touch with Baba at Fatehpuria house Kolkata, in a very critical condition when destiny was hanging between life and death and the doctors gave no hope for my survival. As I was the only son of my parents so they were totally shattered and lost all hope for my life. In this situation my own aunty who was Baba's disciple came to the hospital and told us to go to Fatehpuria House to meet her Guruji Baba and take his Ashirwad.

As my parents had no other option and was only

counting the days for my survival, they took me to Fathepuria House when Baba was giving his Pravachan to his devotees. After Baba's pravachan was over we went in front of him and touched his feet, Baba kept his hand on my head and told "Doctor gave you no hope for your son's life."?

Hearing this shockwave passed through my parents body as nobody told him before to baba that what was the purpose of visit to his place. Then Baba give me his garland which he was wearing and ordered my father to go back to a hospital and retest all the medical reports.

As per Baba's advice my father revisited the hospital and came in touch with senior doctor for further specialised opinion. Again all the reports where made. A medical board was formed for final diagnosis of my disease.

Miracle happend, all the reports which was positive before we visited Baba turned negative and doctors admitted that the diagnosis they made before was completely wrong. That day when my final health report came, my father rushed to Fatehpuria house to convey the message to Baba but on that day Baba left for Vrindavan at 5 pm. But he left a message for my father that when your son will get discharged from the hospital come to Vrindavan at the earliest to take my Ashirwad there. We went to Vrindavan for the first time to take his blessings.

Now I myself is a doctor and realised, from my life that when all the hope of life comes to an end keep faith on Baba he does all the Miracle and is always there to protect us from all th odd events of our life.

Jai Baba Ki!